Dhauladhar Sandesh

News Letter of Central University of Himachal Pradesh

भारतीय ज्ञान परम्परा को बढ़ाने में केंद्रीय विश्वविद्यालय का प्रयास सराहनीय- राज्यपाल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल ने कहा कि नई शिक्षा नीति भारत में परिवर्तन लाएगी। इस व्यापक नीति को एक साथ लागू नहीं किया जा सकता है किन्तु इसे क्रमबद्ध तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। उन्होंने केन्द्रीय विश्वविद्यालय की ओर से मनाए जा रहे स्थापना समारोह में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत करते हुए भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्व को बताते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में इसको बढ़ाने के लिए नया पाठ्यक्रम शुरू कर रहा है यह विश्वविद्यालय परिवार के लिए गर्व की बात है। गत वर्षों में विश्वविद्यालय ने जिन ऊँचाईयों को छुआ है, वह प्रशंसनीय है। उन्होंने विकसित भारत 2047 के लिए विश्वविद्यालय को शोधपूर्ण, गुणवत्ता युक्त शिक्षा केंद्र के रूप में अपनी पहचान बनाने के साथ ही वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने को तैयार करने पर जोर दिया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने मुख्य अतिथि का अभिवादन किया। उन्होंने इस मौके पर मौजूद विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए विगत वर्षों में विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का ब्योरा सभी के समक्ष रखा। उन्होंने मुख्य अतिथि राज्यपाल शिवप्रताप शुक्ल के साथ प्रो. नीलिमा गुप्ता कुलपति, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, प्रो. आर.पी. तिवारी कुलपति, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भठिंडा, प्रो. नागेश ठाकुर कार्यकारिणी सदस्य (NAAC), डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन के कुलपति प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल को हिमाचली टोपी एवं उत्तरीय पहनाकर सम्मानित किया । कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने विश्वविद्यालय परिवार को बधाई देते हुए कहा कि हमें आत्मनिरीक्षण करना होगा कि आज से 14 साल पहले हमने जो विश्वविद्यालय के लिए लक्ष्य तय किए थे, उनको हासिल करने में हम कितने समक्ष साबित हुए हैं। उन्होंने हर्ष जताते हुए कहा कि आज यह विश्वविद्यालय अपने पैरों पर खड़ा हो चुका है।

विश्वविद्यालय का अपना कैंपस नहीं था,अब हम आगामी अकादमिक सत्र देहरा स्थित अपने कैंपस में शुरू करने जा रहे हैं। कैंपस लगभग तैयार हो चुका है। हम लगातार शोध के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न शिक्षण संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए हैं। हमें नैक की ग्रेडिंग में ए प्लस मिला है। यह विश्वविद्यालय के लिए गौरव की बात है। हम इंडियाना यूनिवर्सिटी के साथ ज्वाइंट डिग्री प्रोग्राम शुरू करने जा रहे हैं। विश्वविद्यालय का ग्राफ लगातार ऊपर उठ रहा है। विश्वविद्यालय ने लगभग 25 पेटेंट प्राप्त किए हैं। 7-8 करोड़ के प्रोजेक्ट चल रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय परिवार बधाई का पात्र है। वहीं इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील कुमार, शोध-निदेशक प्रो प्रदीप नायर, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य अन्य अधिकारी एवं कर्मचारियों सहित विश्वविद्यालय के शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर राज्यपाल के हाथों सम्मानित हुए शैक्षणिक संकाय सदस्यों में प्रो. संजीत ठाकुर, प्रो. ओ.एस.के.एस शास्त्री, प्रो. बी.सी चौहान, डा. राकेश और डा. मनप्रीत अरोड़ा प्रमुख रहे । वहीं शिक्षकेतर कर्मचारियों में अनुपम ठाकुर, राहुल, आपूर्ति अवस्थी, रोहित धीमान, हिंदभूषण कुटलैहड़िया और अजय कुमार को पुरस्कृत किया गया।

इस मौके पर राज्यपाल ने विश्वविद्यालय के कैलेंडर 2025 का विमोचन, विश्वविद्यालय के न्यूज लैटर का विमोचन, विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों / समाचार-पत्र का विमोचन, विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर, हिंदी पखवाड़ा 2024 के विजेताओं को प्रमाण-पत्र वितरण, खेल स्पर्धाओं में विश्वविद्यालय की ओर से भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सम्मान और योग स्पर्धा में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि विश्वविद्यालय का न्यूज़ लेटर "धौलाधार सन्देश" का ग्यारहवां अंक (जनवरी - मार्च 2025) प्रकाशित हो रहा है।यह त्रैमासिक पत्र विश्वविद्यालय की तमाम गतिविधियों का एक संकल्य है जो एक समयावधि के पश्चात् भी कालानुक्रमिक क्रम में महत्वपूर्ण सूचनाओं को सर्व सुलभ करने का कार्य करता है। यह विश्वविद्यालय से जुड़े सभी लोगों के लिए गौरवान्वित होने का समय है कि हमारा विश्वविद्यालय नित नवीन ऊँचाइयों को छू रहा है। इस क्रम में विश्वविद्यालय का स्थापना सप्ताह समारोह पहली बार आयोजित किया गया जिसमे हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री शिव प्रताप शुक्ल जी ने मुख्य अतिथि के रूप में नई शिक्षा नीति को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए विश्वविद्यालय के प्रयासों को सराहा। समावेशी प्रयासों से "ए" प्लस ग्रेड प्राप्त करने के बाद यह विश्वविद्यालय शोध विश्वविद्यालय के रूप में पहचान बनाने हेतु अग्रसर हो चुका है। इस क्रम में गत वर्ष नौ से अधिक पेटेंट हुए हैं और पांच करोड़ से अधिक के प्रोजेक्ट चल रहे हैं। शोध और ज्ञान की सीमा उन्नयन हेतु कई अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किए गए हैं जिनमे वोल्मरहैम्पटन विश्वविद्यालय इंग्लैंड, इंडियाना यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेंसिलवानिया आदि प्रमुख हैं। विश्वविद्यालय को ग्रेडेड स्वायत्तता मिलने के बाद एक कदम और बढ़ाते हुए पांच विषयों में ऑनलाइन कोर्सेज़ शुरू किये जा रहे हैं जिसके लिए सेण्टर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन का निर्माण कर दिया गया है और आगामी जुलाई सत्र से पाँचों विषयों में ऑनलाइन कोर्सेज़ शुरू करने की पूरी तयारी है। विश्वविद्यालय पठन-पाठन के अतिरिक्त लगातार ज़ोनल खेल प्रतियोगिता, यूथ पार्लियामेंट, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि कराने में भी सक्रीय है जिसमे पूर्व मुख्य मंत्री, हिमाचल प्रदेश श्री जयराम ठाकुर, सांसद श्री राजीव भरद्वाज आदि नामचीन लोगों ने शिरकत की है।

मैं न्यूज़ लेटर "धौलाधार सन्देश" के नियमित प्रकाशन के लिए पूरी टीम को बधाई देता हूँ।

प्रो. सत प्रकाश बंसल
कुलपति
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

होली पर्व पर हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के परिसर में उड़ा खुशियों का गुलाल

मिठाई खिलाकर और रंग लगाकर, डीजे की धुनों पर थिरके विवि के छात्र

पारुल चौहान

धर्मशाला हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय का परिसर होली के रंग और उमंग से सराबोर हो उठा, जब छात्रों ने मिलकर इस पावन पर्व का हर्षोल्लास से स्वागत किया। रंग, संगीत और भाईचारे के इस उत्सव ने विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विभिन्न पृष्ठभूमि के छात्रों को एक मंच पर ला खड़ा किया, जहाँ उन्होंने एकजुटता और सौहार्द का परिचय दिया। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी विश्वविद्यालय के विभिन्न परिसरों में होली का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें छात्रों के साथ-साथ संकाय सदस्यों और बाहरी आगंतुकों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

धौलाधार परिसर में रंगों की बौछार

धौलाधार परिसर में सुबह से ही होली का उल्लास देखने लायक था। छात्र-छात्राएँ बड़ी संख्या में मैदान में एकत्र हुए और देखते ही देखते पूरा परिसर रंगों की धूम में बदल गया। लाल, हरा, गुलाबी, पीला और अन्य चटख रंगों से सजी हुई भीड़ एक अद्भुत नज़ारा पेश कर रही थी। छात्र एक-दूसरे को रंग-गुलाल लगाते हुए होली की शुभकामनाएँ दे रहे थे। इस समारोह में केवल विश्वविद्यालय के विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि शहर के कई लोग और अन्य मेहमान भी शामिल हुए, जिन्होंने इस आयोजन को और भी भव्य बना दिया। कुछ छात्रों ने पानी से बचते हुए केवल गुलाल के साथ होली खेली, जिससे पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया गया।

संगीत और नृत्य से सजा जश्न

होली के इस पर्व में संगीत ने भी अपनी विशेष भूमिका निभाई। पारंपरिक होली गीतों से लेकर बॉलीवुड के मशहूर गानों तक, हर धुन पर छात्र झूमते नज़र आए। समूह नृत्य, ढोल की थाप और मित्रों के साथ रंगों में सराबोर होकर थिरकते हुए विद्यार्थियों ने पूरे माहौल को संगीतमय बना दिया।

होली के दौरान विभिन्न खेलों और प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, जिसमें रंगों की मस्ती के साथ-साथ हँसी-ठिठोली और आनंद का संचार हुआ। कुछ छात्रों ने ढोल की धुन पर नृत्य करते हुए पारंपरिक अंदाज में होली का मज़ा लिया, तो कुछ ने फोटो खिंचवाकर इन यादगार पलों को संजो लिया।

शारदा गर्ल्स हॉस्टल में इको-फ्रेंडली होली

शारदा गर्ल्स हॉस्टल में छात्राओं ने इस बार होली को एक नया आयाम दिया। उन्होंने पारंपरिक कृत्रिम रंगों की जगह ऑर्गेनिक रंगों का उपयोग किया, जिससे न केवल पर्यावरण की सुरक्षा हुई बल्कि छात्राओं को भी पारिवारिक वातावरण की अनुभूति हुई। यह पहल सभी के लिए प्रेरणादायक रही और इसे काफी सराहा गया। होली केवल रंगों तक सीमित नहीं रही, बल्कि छात्राओं के लिए यह एक विशेष भावनात्मक अनुभव भी सिद्ध हुई । घर से दूर रहकर पढ़ाई करने वाली छात्राओं के लिए यह पर्व उन्हें अपनेपन और परिवार जैसे माहौल का एहसास दिला गया। मिठाइयाँ बाँटी गईं, पारंपरिक पकवानों का स्वाद लिया गया और सभी ने मिलकर हास-परिहास और गीत-संगीत में समय बिताया।

साझा खुशियों का संदेश

इस आयोजन ने यह साबित कर दिया कि होली केवल रंगों का त्योहार नहीं, बल्कि यह सौहार्द, मेल-जोल और खुशियों को साझा करने का पर्व है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने भी इस कार्यक्रम की सराहना की और इसे सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने के लिए विभिन्न समितियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंत में, होली का यह आयोजन सभी के लिए यादगार बन गया। छात्रों ने न केवल रंगों की मस्ती में खोकर आनंद लिया, बल्कि आपसी भाईचारे और एकता का भी संदेश दिया। यह आयोजन उनके जीवन में एक सुनहरी याद बनकर हमेशा बसा रहेगा।

होली, जिसे "रंगों का त्योहार" कहा जाता है, भारत के सबसे लोकप्रिय और उत्साहपूर्ण पर्वों में से एक है। यह त्योहार न केवल रंग और उल्लास का प्रतीक है, बल्कि यह सामाजिक एकता, भाई-चारे की भावना और पुराने मतभेद को भुलाकर नए रिश्तों की शुरुआत का भी प्रतीक है। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में इस वर्ष होली का पर्व बड़े ही धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया गया। विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों-शिक्षकों, कर्मचारियों और छात्रों ने मिलकर इस रंग-बिरंगे त्योहार को साथ मनाया।

कुलपति सचिवालय में समारोह होली के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति सचिवालय में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने सभी को होली की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि होली रंगों का त्योहार है और हमें सभी गिले-शिकवे भुलाकर इसे हर्षोल्लास के साथ मनाना चाहिए। विश्वविद्यालय हर त्योहार को एक परिवार की तरह मनाता है और यह हमारी सांस्कृतिक एकता को दर्शाता है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षकों और कर्मचारियों ने एक-दूसरे को गुलाल लगाकर होली की बधाई दी। सभी डीजे की धुनों पर जमकर थिरके । विश्वविद्यालय परिसर रंगों और खुशियों से गूँज उठा।

अगले वर्ष अपने कैंपस में गणतंत्र दिवस मनाएगा सीयू

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में 76वां गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने धौलाधार परिसर एक में राष्ट्रीय ध्वज फहराया और सलामी ली। इसके बाद उन्होंने विश्वविद्यालय परिवार को संबोधित किया। धौलाधार परिसर एक के परिसर निदेशक प्रो. रोशन लाल शर्मा ने कुलपति एवं विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों का स्वागत किया। दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम का आरम्भ हुआ।

वहीं कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने सभी को हिमाचल दिवस के साथ-साथ गणतंत्र दिवस की बधाई देते हुए हर्ष जताया कि विश्वविद्यालय अपना अगला गणतंत्र दिवस अपने कैंपस के आडिटोरियम में मनाएगा। इस बार विश्वविद्यालय ने अपनी छुटि्टयों का शैड्यूल बदला है ताकि विश्वविद्यालय परिवार एक साथ अपना स्थापना सप्ताह और गणतंत्र दिवस मना सके।सप्ताह भर विश्वविद्यालय के सभी विभागों ने खूब बढ़-चढ़ कर कार्यक्रमों का आयोजन किया। कई गतिविधियाँ आयोजित की गईं। यह प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि आज विश्वविद्यालय उस स्तर पर खड़ा है, जहाँ पहुँचाने में विश्वविद्यालय परिवार के हर सदस्य का महत्वपूर्ण योगदान है। अब हमारा विश्वविद्यालय अग्रणी पंक्ति में आ गया है। विश्वविद्यालय की प्रगति के उदाहरण दिए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में विश्वविद्यालय ने देशभर में अपना स्थान बनाया है। गणतंत्र दिवस सभी संस्थानों में धूमधाम से मनाया जाता है। इसी तरह शिक्षण संस्थानों में भी मनाया जाता है। आज हमें अपने देश के प्रति लिए गए संकल्पों को दोहराने की आवश्यकता है। हमने जिस धरा पर जन्म लिया है उसके प्रति हमारे कुछ कर्तव्य हैं जो हमें पूरे करने हैं। भारत माता के लिए हमने क्या किया है ! हमें आज आत्मचिंतन करना होगा। इस मौके पर परीक्षा नियंत्रक प्रो. अंबरीश कुमार महाजन ने सभी का इस कार्यक्रम में उपस्थित होने पर आभार व्यक्त किया । इस

अवसर पर कुलपति के साथ कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा के अलावा अन्य संकाय सदस्य मौजूद रहे।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमे देशभक्ति गीतों पर सभी उल्लसित नज़र आये। इस पुनीत अवसर पर भारत के वीर सपूतों को भी याद किया गया, माँ भारती के इन शहीदों को याद करते हुए लोगों की आँखें सहज ही भर आईं। विद्यार्थियों की ऊर्जा से भरी हुई प्रस्तुतियों से पूरा माहौल देशभक्तिमय हो गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर-१ के निदेशक प्रोफ़ेसर रोशन लाल शर्मा ने कुलपति महोदय को हिमाचली उत्तरीय ओढाकर उनका स्वागत किया. | माननीय कुलपति महोदय ने इस अवसर पर शिक्षकों और शिक्षकेतर कर्मियों से रूबरू होते हुए दो तरफा संचार स्थापित किया और उनका कुशलक्षेम भी पूछा।

"विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2025" के लिए सीयू बना हिमाचल राज्य की नोडल एजेंसी

धर्मशाला। विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2025 के लिए हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को हिमाचल प्रदेश राज्य की नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। इस संदर्भ में, विश्वविद्यालय चरण 3 के तहत राज्यभर से प्राप्त पीपीटी प्रविष्टियों का व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण निरीक्षण/मूल्यांकन दिनांक 02 जनवरी, 2025 को धौलाधार परिसर-। और परिसर-॥ में करेगा। इसके लिए विभिन्न समितियों का गठन विश्वविद्यालय की ओर से कर लिया गया है। प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ समन्वयक और प्रो. सूर्यरश्मि रावत सह समन्वयक बनाए गए हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय के पास लगभग 110 विद्यार्थियों की प्रविष्टियाँ आई हैं। सभी प्रतिभागी हिमाचल के रहने वाले हैं और विविध राज्यों में निजी व सरकारी शिक्षण संस्थानों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

गौरतलब है कि राष्ट्रीय युवा महोत्सव में सीयू अपनी सहभागिता निभा रहा है। MY Bharat Portal (https://mybharat.gov.in) जो भारत सरकार के युवा मामले विभाग की ओर से शुरू किया गया एक प्लेटफॉर्म है। पोर्टल पर उपलब्ध एक प्रमुख अवसर ''विकसित भारत युवा नेता संवाद'', अर्थात् पुनः परिकल्पित 'राष्ट्रीय युवा महोत्सव, 2025' से संबंधित है। चुनौती चरण एक विकसित भारत प्रश्नोत्तरी से संबंधित रहा। वहीं चरण दो डिजिटल रहा। इस चरण में निबंध लेखन प्रमुख गतिविधि रही। अब चरण तीन के

के अंतर्गत प्रत्येक राज्य अपने-अपने ट्रैक से शीर्ष 4 प्रतिभागियों का चयन करेगा, जो राज्य की टीम का हिस्सा बनेंगे। इसके बाद चरण चार के तहत विकसित भारत चैंपियनशिप (राष्ट्रीय युवा महोत्सव) का एलिमिनेशन राउंड आयोजित किया जाएगा, जिसमें फाइनल के लिए शीर्ष टीमों का चयन किया जाएगा। ये शीर्ष टीमें 12 जनवरी को प्रधानमंत्री के समक्ष अपनी प्रस्तुतियाँ देंगी। कार्यक्रम के समन्वक प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ के अनुसार राज्यभर से प्राप्त पीपीटी प्रविष्टियों का व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण निरीक्षण/मूल्यांकन के पश्चात छात्रों का चयन कर उन्हें दिल्ली में आयोजित होने वाले Elimination Round व चयन के उपरांत माननीय प्रधानमंत्री के समक्ष प्रेजेंटेशन हेतु दिल्ली लेकर जाने एवं वापस लाने का प्रबंधन किया जाएगा। सीयू के पास लगभग 110 विद्यार्थियों की प्रविष्टियां आईं हैं। जिनमें से 30 से 40 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा। विद्यार्थियों की आयु सीमा 18 से 28 वर्ष के बीच की है।

इस दौरान प्रदेश भर से विद्यार्थी विकसित भारत के लिए तकनीक, विकास, विरासत आदि के साथ विकसित भारत के लिए युवाओं को सशक्त बनाने, कृषि की उत्पादकता बढ़ाने, भारत को विश्व की स्टार्टअप राजधानी बनाने, भारत को एक स्पोर्टिंग और फिट राष्ट्र बनाने, भारत को वैश्विक विनिर्माण पावरहाउस बनाने, भारत को ऊर्जा कुशल बनाने, भविष्य के लिए बुनियादी ढाँचे केनिर्माण, महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक संकेतकों में सुधार करने जैसे विषयों पर व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण भी देंगे।

इस दृष्टि से कुलपति प्रो. बंसल डाढ़ स्थित निजी होटल में समूचे हिमाचल के प्रतिभागियों से रूबरू होंगे। कुलपति कार्यक्रम का शुभारंभ भी करेंगे और बच्चों के अनुभवों को भी सुनेंगे। इसके बाद धौलाधार परिसर-एक के सेमिनार हाल में कार्यक्रम का विधिवत आयोजन होगा।

विद्यार्थियों ने नामी कंपनियों की स्थिरता रिपोर्ट की प्रस्तुत

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर दो में सस्टेनेबिलिटी क्लब ने एमबीए द्वितीय सेमेस्टर की वित्तीय प्रबंधन कक्षा के ग्रुप-ए के सहयोग से महत्वपूर्ण गतिविधि का आयोजन किया। इसमें विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

विद्यार्थियों ने कोका-कोला, आईटीसी लिमिटेड, रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और टाटा स्टील सहित विभिन्न कंपनियों की स्थिरता रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य बड़ी कंपनियों द्वारा किए गए स्थिरता हस्तक्षेपों के बारे में जानना रहा।

सत्र की अध्यक्षता प्रो. सूर्य रश्मि रावत ने की | निर्णायक मंडल में सम्मानित संकाय सदस्य के रूप में डॉ. अदिति शर्मा, डॉ. रीता देवी, डॉ. सर्वेश कुमार और डॉ. रुचि शर्मा की उपस्थिति रही । वहीं इस मौके पर डॉ. पूजा अवस्थी, जनसंपर्क अधिकारी सीयूएचपी बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद रहीं। डॉ. मनप्रीत अरोड़ा ने ग्रुप ए के संकाय और एचपीकेवीबीएस के सस्टेनेबिलिटी क्लब के संयोजक के रूप में इन प्रस्तुतियों का नियोजन किया। गतिविधि के अंत में, उन्होंने सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना की और कहा कि छात्रों ने इस सत्र से बहुत कुछ सीखा है। उन्होंने बताया कि इसमें विद्यार्थियों ने ग्रुप बनाकर अपनी प्रेजेंटेशन दी। इसमें पहले ग्रुप में नितिका, पलक, पलक, पल्लवी दूसरे ग्रुप में अविराज माथुर. बाबू साहेब कुमार, बलप्रीत सिंह, भूपेंद्र सिंह, दिव्यांश राजदीप, मनप्रीत तीसरे ग्रुप में अब्दुल, अबनीश जायसवाल, अक्षय कपूर, अनमोल, आशीष शर्मा, कार्तिक पठनिया चौथे ग्रुप में अक्षय कुमार, हर्ष, अफथाब और मोहित ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। वहीं इस गतिविधि के सफल आयोजन पर कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल सहित अधिष्ठाता प्रो. संजीव गुप्ता और विभागाध्यक्ष प्रो. दीपांकर शर्मा ने बधाई दी ।

प्रदेश से चयनित विद्यार्थियों ने विकसित भारत के लिए महत्वपूर्ण आयामों पर रखे अपने विचार

धर्मशाला। विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2025 के लिए हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को हिमाचल प्रदेश राज्य की नोडल एजेंसी के रूप में नामित किया गया है। इस संदर्भ में, वीरवार को चरण तीन के तहत राज्यभर से प्राप्त पीपीटी प्रविष्टियों का व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण निरीक्षण/मूल्यांकन धौलाधार परिसर-। और परिसर-॥ में किया गया और विद्यार्थियों का चयन किया गया। इससे पहले पूरे हिमाचल के 10 जिलों से चयनित प्रतिभागियों ने केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल से मुलाकात की और उन्हें अपने-अपने विषयों के बारे में बताया। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि विकसित भारत 2047 के अनुरूप कई कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय ने आयोजित किए हैं।

उसी कड़ी में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और युवा मंत्रालय ने विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद 2025 का पीपीटी प्रस्तुतीकरण का केंद्रीय विवि में आयोजित किया । इसके दो चरण पूर्व में संचालित हो चुके हैं। पहले युवाओं से कुछ प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई थीं। इसमें स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भाग लिया। वहाँ से छात्र अब आगे के चरण को पार करके चरण तीन में पहुंचे हैं। इसके लिए हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय को पूरे राज्य की नोडल एजेंसी बनाया गया है।

कुलपति ने कहा कि लगभग 119 रजिस्ट्रेशन प्रतिभागियों की आई हैं। उसके तहत हमारे 12 जिलों से 10 जिलों के विद्यार्थी रिप्रजेंटेशन के लिए धर्मशाला आए हैं और आज हमने यहाँ 20 ज्यूरी मेंबर्स सेलेक्ट किए हैं। 10 विषय चयनित किए हैं, जिनमें बच्चे अपनी प्रतिभा दिखाएंगे और उनमें से जो बच्चे सेलेक्ट होंगे वे सभी दिल्ली जाएंगे, जिसकी व्यवस्था हमारा हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय कर रहा है। दिल्ली जो बच्चे जाएंगे, उनकी 11 तारीख को एक प्रतियोगिता और होगी और जो बच्चे वहाँ से सेलेक्ट होंगे, 12 तारीख को फाइनल राउंड में प्रधानमंत्री जी के समक्ष उन्हें बोलने का अवसर मिलेगा। इस मौके पर कुलपति के साथ डॉ. सुनीता बंसल, कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, समन्वयक प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ, सह समन्वयक प्रो. सूर्यरश्मि रावत और अन्य संकाय सदस्य मौजूद रहे। इसके बाद विभिन्न जिलों से आए विद्यार्थियों का धौलाधार परिसर एक में स्वागत किया गया। इस दौरान आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को बधाई देते हुएअगले चरण के लिए शुभकामनाएं दीं। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय चरण तीन के तहत राज्यभर से प्राप्त पीपीटी प्रविष्टियों का व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण निरीक्षण/मूल्यांकन धौलाधार परिसर-। और परिसर-॥ में किया गया। प्रो. संदीप कुलश्रेष्ठ समन्वयक और सह समन्वयक प्रो. सूर्यरश्मि रावत ने बताया कि सीयू के पास लगभग 110 विद्यार्थियों की प्रविष्टियाँ आईं थीं, जिनमें से 30 से 40 विद्यार्थियों का चयन होगा । विद्यार्थियों की आयु सीमा 18 से 28 वर्ष के बीच की है।

इस दौरान प्रदेश भर से विद्यार्थियों ने विकसित भारत के लिए तकनीक, विकास, विरासत, विकसित भारत के लिए युवाओं को सशक्त बनाने, कृषि में उत्पादकता बढ़ाने, भारत को विश्व की स्टार्टअप राजधानी बनाने, भारत को एक स्पोर्टिंग और फिट राष्ट्र बनाने, भारत को वैश्विक विनिर्माण पावरहाउस बनाने, भारत को ऊर्जा कुशल बनाने, भविष्य के लिए बुनियादी ढाँचे के निर्माण, महिलाओं को सशक्त बनाने और सामाजिक संकेतकों में सुधार जैसे विषयों पर व्यक्तिगत प्रस्तुतीकरण दिया।

Blending Knowledge and Innovation

In today's rapidly evolving world, where technology—particularly the latest advancements in Artificial Intelligence—has taken center stage, the role of educational institutions has become more challenging than ever. On the one hand, there is an overwhelming flood of information shaping young, impressionable minds; on the other, digital literacy remains in its infancy for many. While new AI tools have made access to information remarkably convenient, this "knowledge" must be paired with wisdom. Without this foundation, the so-called digital natives may struggle to navigate the relentless pace of technological advancements, environmental crises, and socio-economic complexities that define their lives.

The rise in cyberbullying and other crimes facilitated by social media platforms is a stark reminder of this gap. Many young individuals involved in such acts are often unaware of the gravity of their actions, lacking the moral compass to guide their behavior. Tragic incidents, where students have taken their own lives following online humiliation or have harassed others—including teachers—on social media, are no longer rare. These alarming trends underscore the urgent need to embed a strong value system within our educational framework. While it may not be feasible to fully revive the traditional Gurukul system, its core principles can and should be integrated into modern education, leveraging technology to enhance learning while instilling moral values. Against this backdrop, the integration of modern education with the Indian Knowledge System (IKS) has gained significant importance. Higher educational institutions are now expected to transcend their traditional roles of imparting knowledge and conducting research. Recognizing these challenges, the National Education Policy (NEP) 2020 envisioned IKS as a vital component of the modern educational framework, recommending its adoption across institutions. The Central University of Himachal Pradesh has taken a commendable lead in this regard under the visionary leadership of Vice Chancellor Sat Prakash Bansal, setting an inspiring example for others to follow.

The university is making remarkable strides in blending AI and IKS, enabling students to harmonize traditional wisdom with cutting-edge technology. The Central Universities Act of 2009 laid a strong foundation for such initiatives, and now the onus lies on higher educational institutions nationwide to embrace this mission with transformative innovation. By incorporating AI and quantum computing into educational programs, universities can revolutionize learning, equipping students with skills essential for future careers. AI-driven tools, for instance, can personalize education to cater to diverse learning styles, making the process more inclusive and impactful. However, this technological leap must be grounded in the moral values that have long been the cornerstone of traditional education. These efforts align seamlessly with the vision of Prime Minister Narendra Modi, who has consistently emphasized the integration of modern and traditional education while advocating for physical fitness. Quoting Swami Vivekananda, he has urged young people to excel in all fields, championing the mantra, "A healthy body has a healthy mind." It is a matter of immense pride that the Central University of Himachal Pradesh, under Vice Chancellor Bansal's sagacious leadership, is prioritizing both academic and sporting excellence. The university embodies the spirit of "Arise, awake, and stop not until the goal is reached," setting a benchmark for holistic education. Having taken steady steps forward since its inception over a decade and a half ago, the university now proudly holds an A+ grade from NAAC. By fostering dynamic learning, interdisciplinary research, and a deep commitment to societal welfare, it is shaping not just individuals but entire generations, preparing them to tackle the global challenges. As the saying goes, universities do not merely educate—they transform lives and build a better world.

Prof. Aditya Kant,
Editor-in-Chief

From Myth to Machine: Tracing the Origins of Artificial Intelligence in Ancient Indian Literature

The formation of AI is framed and structured through literature. The origins of Artificial Intelligence (AI) can be traced back to ancient mythology and literature, where the concept of automation was deeply ingrained in both Eastern and Western traditions. The idea of self-operating machines and artificial beings appear in the works of Homer (autonomous vehicles and golden slave girls), as well as in Hindu epics like the *Ramayan* and the *Mahabharat*. Hindu mythology describes automatons created by the divine architect Vishwakarma and the sorceress Maya, similar to the Greek myths of Hephaestus and Daedalus, who crafted mechanical beings. Such narratives can be considered early examples of science fiction. Furthermore, such intricate blend of myth, metaphysics, and early mechanical innovations found in ancient Indian literature presents a fascinating precursor to the AI-driven contemporary world. Ancient Indian scriptures contain numerous references to advanced mechanical devices and automation. For example, the Rig Ved describes a chariot pulled by horses made of metal, while the Yajur Ved mentions machines capable of producing music and dance. These texts suggest an early conceptualization of mechanized and possibly autonomous systems. A prominent example from the *Ramayan* is the Pushpak Viman, a self-propelled aerial vehicle attributed to the deity Kuber and later used by Ravan and Ram. This flying chariot, described as autonomous and capable of traveling vast distances at an incredible speed, bears a resemblance to modern aviation and even artificial intelligence driven navigation systems. In addition to the Vedas, the *Mahabharat* also references advanced machines. One of the most compelling examples is about the legendary architect Maya, who is said to have created a palace filled with automated wonders, including self-moving doors and life like statues. The illusions and automatic functions in the palace of illusions (Maya Sabha) mirror the principles of AI-driven automation today. Another most well-known examples, Vimanas, flying machines allegedly powered by mercury and controlled by the mind, hinting at concepts resembling modern aerospace engineering and neural control (Super AI) interfaces. Beyond literature, ancient Indian scholars and philosophers explored the idea of artificial beings and mechanical automation. The concept of the mechanical man (a form of early robotics) was extensively discussed. One notable example is Yantra Sarvasva, a text attributed to Bharata Muni in the 2nd century BCE, which details various machines and automata, including a humanoid robot capable of movement, speech, and performing tasks like weaving. Additionally, the renowned 8th-century mathematician and astronomer Brahmgupt wrote about automated machines designed to perform mathematical calculations. His work, the *Brahmasphutasiddhanta*, includes instructions for constructing a device called the chakravala, a mechanical calculator capable of solving complex algebraic equations. This early exploration of computational automation can be seen as a precursor to modern computing. Similarly, a striking example from the *Mahabharat* is the concept of Divya Drishti, granted to Sanjay by Krishan, allowing him to provide a real-time account of the Kurukshetr war to the blind king Dhritarashtr. This bears a resemblance to modern satellite imaging and wireless transmissions, demonstrating how ancient texts contain ideas that, when viewed through a technological lens, anticipate modern advancements. In a nutshell, these stories and scholarly works not only serve as moral and philosophical guides but also inspire futuristic technological possibilities when interpreted through a contemporary scientific perspective. The historical and literary references to automation and artificial beings illustrate that the fundamental ideas behind artificial intelligence are not purely modern inventions but have deep roots in human imagination and inquiry. Ancient myths, scriptures, and scholarly works from diverse cultures have long envisioned self-operating machines, intelligent automatons, and advanced computational devices, highlighting an enduring human desire to create and understand intelligence beyond the biological realm. These early conceptualizations provide a valuable perspective on the evolution of AI, demonstrating that its formation is deeply intertwined with literature, philosophy, and cultural narratives. By revisiting these ancient Indian texts through a modern technological lens, we can gain fresh insights into the origins of AI while recognizing the timeless nature of human innovation and curiosity.

Dr. Khem Raj Sharma
Professor, Department of English , CUHP

Himachal's 39 Students Participated in an Event at Bharat Mandapam

Dharamshala The delegation of students from Himachal Pradesh who participated in the "Viksit Bharat Young Leaders Dialogue 2025" organized by the Union Ministry of Youth Affairs, Government of India, at Bharat Mandapam in New Delhi, has returned. A total of 39 students attended this event under the aegis of the Central University of Himachal Pradesh, which served as the nodal agency for the state. The delegation comprised students from various private and government educational institutions across Himachal Pradesh. The program witnessed participation from approximately 30 lakh students representing all states and union territories of India, including Andaman & Nicobar, Chandigarh, Delhi, Dadra & Nagar Haveli, Ladakh, Lakshadweep, and Puducherry. Among them, only 3,000 students were selected to be physically present at Bharat Mandapam and represent their respective states at the National Youth Festival. On January 12, the birth anniversary of Swami Vivekananda, the students had the privilege of listening to the thoughts of PM Narendra Modi. According to the students, representing Himachal Pradesh on such a prestigious platform was a golden opportunity, where they competed with participants from across the country. Congratulating the returning delegation, the Vice-Chancellor of Central University, Prof. Sat Prakash Bansal, expressed pride in the institution's role in representing Himachal Pradesh at such a grand stage. He commended the students for delivering their best performances. The university had designated two faculty members, Prof. Malkiat Singh and Dr. Pooja Awasthi, as Public Relations Officers to accompany the delegation. Out of the 39 students from Himachal Pradesh, four students were chosen to represent the state in the next phase. These included Suraj from Government College Sanjauli, Shimla; Vaishnavi Dogra from Degree College Dharamshala; and Nitin from Pharmacy College, Rohru. Additionally, Arnav from Pharmacy College Rohru was selected for the final phase, where he got the opportunity to meet Prime Minister Narendra Modi. Arnav described this as a priceless experience, stating that while he had seen and heard the Prime Minister before, getting a chance to speak with him in person was a thrilling moment. During the program, the Himachal delegation had the opportunity to interact with senior political leaders, including Union Health Minister J.P. Nadda, MP Anurag Thakur, Rajya Sabha MP Indu Goswami, and MP Suresh Kashyap. The students engaged in discussions with them and even had their dinner together.

A child's early education should be in their mother tongue

Seminar on NEP 2020 Held at Central University, Chancellor Present

Dharamshala Padma Shri Prof. Harmohinder Singh Bedi, Chancellor of Himachal Pradesh Central University, emphasized the importance of Indian languages in the context of the National Education Policy (NEP) 2020. He stated that, according to NEP 2020, a child's early education should be in their mother tongue. He also mentioned that around 2.5 lakh people provided their feedback during the formulation of this policy. He was speaking as the chief guest at a seminar organized in the seminar hall of Dhauladhar Campus-1 on Wednesday as part of the university's 15th Foundation Day celebrations.

The seminar was organized by the Punjabi, Dogri, and Hindi departments of the university, with the theme 'The Status of Regional Languages in NEP 2020.' The event commenced with the lighting of the ceremonial lamp. Dr. Naresh Kumar, Head of the Punjabi and Dogri Department, welcomed the chief guest, distinguished guests, and other dignitaries. The seminar was held under the supervision of the university's Vice-Chancellor, Prof. Sat Prakash Bansal. On this occasion, the distinguished guest, Prof. Rajeshwar Singh Chandel, Vice-Chancellor of Dr. Y.S. Parmar University of Horticulture and Forestry, Nauni, shared his insights with the students. He highlighted the glorious history of Indian languages and stressed the adoption of India's organic farming model. During his address, Chief Guest Padma Shri Prof. Harmohinder Singh Bedi elaborated on the ancient history of the Gurmukhi script, mentioning that the first book in Punjabi, *Ekadashi Mahatam,* dates back to the 12th century. Prof. Pradeep Kumar, Dean of Academics, also shared his views on Indian languages. At the conclusion of the event, Prof. Roshan Lal Sharma, Dean of the Faculty of Languages, expressed gratitude to the chief guest, research scholars, and students for their participation and support. Dr. Harjinder Singh from the Punjabi and Dogri Department served as the event's moderator.The event was attended by Dr. Malkiat Singh, Dr. Narendra Pandey, Dr. Hem Raj Bansal, Prof. Naduri Gopal, and Dr. Preeti Singh, among others.

Prof. Neelima Gupta Delivers Special Address on Central University's 15th Foundation Day

Dharamshala On the occasion of the 15th Foundation Day and a week-long celebrations of Himachal Pradesh Central University, Prof. Neelima Gupta, Vice-Chancellor of Dr. Harisingh Gour University, Sagar, delivered a special address at the Shahpur campus. As the chief guest, she appreciated the university's achievements over the past 15 years and described it as exemplary for other institutions. She praised the efforts in education, innovation, and research under the leadership of Vice-Chancellor Prof. Sat Prakash Bansal. She also acknowledged the university's initiatives to promote the Indian knowledge tradition, calling them historic, and emphasized the importance of incorporating the Indian knowledge system into the curriculum. The celebrations were further enriched by cultural programs and various competitions. Prof. Gupta described the university not just as an educational institution but as an ideology that prioritizes knowledge, truth, and social upliftment. She also felicitated the winners of the National Mathematics Day and the poster competition, Garima Thakur and Ruchika Rana.

सीयू में चल रहे पाँच करोड़ से अधिक के प्रोजेक्ट – प्रो. बंसल

केंद्रीय विश्वविद्यालय के लिए उपलब्धियों भरा रहा वर्ष 2024

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय लगातार उपलब्धियाँ बटोर रहा है। एक तरफ जहाँ विश्वविद्यालय को नैक की ग्रेडिंग में 'ए प्लस' मिला, वहीं देश-विदेश के शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर के साथ विश्वविद्यालय शोध विश्वविद्यालय बनने की ओर अग्रसर रहा। वित्तीय वर्ष 23-24 में 20 से अधिक और इस साल दिसंबर तक 9 से अधिक पेटेंट हुए हैं। मौजूदा समय में विश्वविद्यालय में 5 करोड़ से अधिक के 26 से अधिक प्रोजेक्ट चल रहे हैं। पी-एच.डी की 78 डिग्री अवार्ड हुई हैं। 32 से अधिक शैक्षणिक संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए हैं। भारत वर्ष के एक प्रतिनिधिमंडल ने कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल की अगुवाई में वोल्वरहैम्पटन विश्वविद्यालय इंग्लैंड में 02 अक्तूबर से 06 अक्तूबर तक इंडियन टूरिज्म एंड हॉस्पिटैलिटी कांग्रेस (ITHC) के पन्द्रहवें अधिवेशन में भाग लिया। कुलपति ने अपने लंदन दौरे के दौरान इंडिया नॉलेज कंसोर्टियम की ओर से लंदन के प्रतिष्ठित किंग्स कॉलेज में आयोजित एक संगोष्ठी के दौरान मौजूद शिक्षकों, भारतीय मूल के विद्यार्थियों और ब्रिटिश मूल के विद्यार्थियों को संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और कैंब्रिज विश्वविद्यालय का दौरा किया। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल के अनुसार यह साल विवि के लिए उपलब्धियों भरा रहा है। अभी हाल ही में विश्वविद्यालय को वाइब्रेंट इंडिया एक्सपो 2024 में उच्च शिक्षा श्रेणी में प्रथम स्थान मिला । अभी विवि को बेंचमार्क यूनिवर्सिटी फॉर रिसर्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। विश्वविद्यालय की सांविधिक बैठकों 'अकादमिक परिषद, कार्यकरिणी परिषद, वित्त समिति में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं जो भविष्य में विश्वविद्यालय को नवीन उचाईयों पर ले जायेंगे। भारत सरकार ने समर्थ पोर्टल के 44 मोड्यूलस को लागू करने के निर्देश दिए हैं।

सीयू और इंडियाना यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया के बीच हुए समझौते के अनुसार जल्द ही एमबीए (इंटरनेशनल) संयुक्त डिग्री कार्यक्रम और संयुक्त प्रकाशन शुरू करने जा रहे हैं। दो दिवसीय दौरे के दौरान इंडियाना यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया के चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. एस.पी बंसल की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के साथ मैराथन बैठक कर इस प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया। सीयू और सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क (इनफ्लिबनेट) केन्द्र, गांधीनगर के बीच, सीयू और सभ्यता अध्ययन केंद्र दिल्ली सीयू और डॉक्टर हरि सिंह गौर

- **शोध और नवाचार: 5 करोड़ से अधिक लागत की 26+ शोध परियोजनाएँ, 20+ नए पेटेंट।**
- **अंतरराष्ट्रीय सहयोग: 32+ संस्थानों के साथ MoUs।**
- **NAAC ग्रेडिंग: 3.42 CGPA के साथ A+ ग्रेड,**
- **छात्र उपलब्धियाँ: 100+ छात्रों ने UGC JRF/NET/PhD प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण की, 78 पीएचडी डिग्री प्रदान।**
- **नियुक्तियाँ और भर्ती: 220 संकाय पदों की स्वीकृति, 18 प्रोफेसर, 44 एसोसिएट प्रोफेसर, 112 असिस्टेंट प्रोफेसर की नियुक्ति।**

विश्वविद्यालय, सागर-(म.प्र.) के बीच, और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों और प्रतिनिधियों के लिए आईआरसीटीसी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। वहीं भारतीय विश्वविद्यालय संघ, काठमांडू विश्वविद्यालय के सहयोग से "भारत-नेपाल उच्च शिक्षा शिखर सम्मेलन" में विवि के प्रतिनिधिमंडल ने शिरकत की।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का सातवाँ दीक्षान्त समारोह 06 मई ,2024 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ | इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी विशेष रूप से उपस्थित रहीं | इस समारोह में राष्ट्रपति ने अपने कर कमलों से पीएच-डी.,एम.फिल, स्वर्ण पदक, स्नातकोत्तर, स्नातक कार्यक्रम के छात्रों / छात्राओं तथा शोधार्थियों को उपाधि से अलंकृत किया | हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय प्रवेश और नौकरियों के लिए सम्पूर्ण रूप से पारदर्शी रहा है, इसके लिए ऑनलाइन आवेदन आमन्त्रित करता है । प्रवेश की प्रक्रिया सीयूईटीके समर्थ पोर्टल के माध्यम से संचालित की जाती है। विश्वविद्यालय अपने लक्ष्यों के प्रति निष्ठावान है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के समुचित क्रियान्वयन के लिए अग्रदूत की भूमिका निभा रहा है | मुझे हर्ष है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत हम निर्धारित पाठ्यक्रमों को द्विभाषी (अंग्रेजी व हिन्दी) कर रहे हैं |

छात्रों के लिए खेलों का विशेष महत्त्व होता है, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय इस दिशा में भी अग्रणी भूमिका में है | अखिल भारतीय अन्तर राष्ट्रीय महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता का सफलतम आयोजन इसका साक्षात् प्रमाण है | NAAC द्वारा विश्वविद्यालय को 3.42 के CGPA के साथ A+ ग्रेड के साथ मान्यता प्रदान की गई है । अपनी शैक्षिक यात्रा का एक और स्वर्णिम क़दम काठमांडू शिखर सम्मेलन(14-16 फ़रवरी,2024) रहा जो ज्ञान की अजस्र वेगमयी धारा द्वारा विश्वविद्यालय के दृष्टिपत्र के साथ एक अलग आभा में आलोकित हुआ |

केंद्रीय विश्वविद्यालय में भरे जा रहे हैं रिक्त पद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालय के लिए 220 संकाय सदस्य स्वीकृत किए हैं, जिसके अन्तर्गत 32 प्रोफेसर, 61 एसोसिएट प्रोफेसर,और 127 असिस्टेंट प्रोफेसर का अनुपात सम्मिलित किया गया है | इसी चयन प्रक्रिया के अन्तर्गत 18 प्रोफेसर, 44 एसोसिएट प्रोफेसर और 112 असिस्टेंट प्रोफेसर नियमित रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं | शेष रिक्त पदों को भरने की प्रक्रिया तीव्रगति से पूर्णता की ओर अग्रसर है | प्रशासनिक और शिक्षकेतर संवर्ग में समूह -A के अन्तर्गत 21, समूह -B के अन्तर्गत 32 समूह - C के अन्तर्गत-75 पदों की सृजन स्वीकृति वित्त परिषद् और कार्यकारिणी परिषद् द्वारा प्राप्त हो चुकी है इस प्रक्रिया की सहमति विश्ववविद्यालय अनुदान आयोग से भी प्राप्त हुई है|

शिक्षकेतर कमचारियों के जो पद भरे गये हैं उनमें समूह -A के अंतर्गत -16,समूह -B के अंतर्गत -14, समूह -C के अंतर्गत 41 पद 31-03-2024 तक नियमित रूप में भरे गये हैं | शेष रिक्त पदों को भरने के लिए विश्ववविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा NTA को अधिकृत करके उक्त चयन प्रक्रिया को परीक्षा के माध्यम से पूर्ण करने का निर्णय लिया गया है | वहीं शैक्षणिक सत्र 2023-24 के अन्तर्गत स्नातक स्तर में 82, परास्नातक स्तर में 765, पीएच-डी.में 101 (कुल संख्या 948) अपनी शिक्षापरक / शोधपरक यात्रा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2024 के अन्तर्गत तय कर रहे हैं |

अब विभिन्न विषयों की पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित करेगा विश्वविद्यालय

केंद्रीय विश्वविद्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में बोले कुलपति प्रो. बंसल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि विश्वविद्यालय में हिन्दी भाषा के विकास के लिए अकादमिक स्तर पर अनेक कार्य किए जाएंगे। विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभाग/केंद्र की ओर से अपने विषय की कम से कम एक-एक पुस्तक को हिंदी में विश्वविद्यालय के प्रकाशन ब्यूरो द्वारा प्रकाशित किया जाएगा। उन्होंने यह बात शुक्रवार को केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर-1 में राजभाषा हिंदी की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा । उन्होंने अधिष्ठाता/ विभागाध्यक्ष /केंद्र निर्देशक आदि के साथ तथा विश्वविद्यालय के प्रत्येक सदस्य को हिंदी में प्राप्त शत प्रतिशत का लक्ष्य अर्जित करने पर बधाई दी और भविष्य में भी इस उपलब्धि को बनाए रखने के निर्देश दिये । उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की योजना है कि विश्वविद्यालय की ओर से 50 पुस्तकें अगले 06 माह में हिंदी में प्रकाशित की जाएंगी, जिससे विभिन्न विषयों में हिंदी माध्यम में स्तरीय पुस्तकों की उपलब्धता हो सके तथा शोधार्थियों/विद्यार्थियों को इन पुस्तकों का अध्ययन और शोध में लाभ मिल सके। विश्वविद्यालय का यह महत्वपूर्ण प्रयास संपूर्ण राष्ट्र में भारतीय भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन के प्रयास को गति प्रदान करेगा। विश्वविद्यालय द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठ्यक्रमों के पाठ्य-विवरणों की हिंदी में उपलब्धता का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है और कई विभागों/केंद्रों द्वारा पाठ्यक्रमों को हिंदी में उपलब्ध कराया जा चुका है।

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के पठन-पाठन की दृष्टि से दोनों भाषाओं अर्थात हिंदी एवं अंग्रेजी में प्रश्न-पत्र निर्माण एवं परीक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है । इस अवसर पर राजभाषा हिंदी के सहायक निदेशक संजय कुमार सिंह ने विश्वविद्यालय में राजभाषा हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट को सभी के समक्ष रखा। इस मौके पर मौजूद अधिष्ठाताओं और विभागाध्यक्षों ने अपने विचार भी रखे। वहीं इस मौके पर कुलपति ने डॉ. मलकीयत सिंह, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग और प्रो. चंद्रकांत सिंह को सीमा सुरक्षा बल, पंजाब क्षेत्र के बटालियन, सेक्टर मुख्यालय, फ्रंटियर मुख्यालय, तोपखाना, प्रशिक्षण केंद्रों आदि में गृह मंत्रालय की ओर से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और कार्यशाला प्रशिक्षण के लिए आमंत्रित किए जाने पर भी बधाईयाँ दीं।

बैठक में प्रो. सत प्रकाश बंसल, कुलपति, डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित', हिंदी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान, प्रो. सुमन शर्मा, कुलसचिव, प्रो. ए. के. महाजन, परीक्षा नियंत्रक सहित विश्वविद्यालय के सभी परिसरों से आए हुए विभिन्न स्कूलों एवं विभागों/केंद्रों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष एवं केंद्र निदेशक उपस्थित रहे।

कुलपति ने किया "विपाशा का गांव" उपन्यास का विमोचन

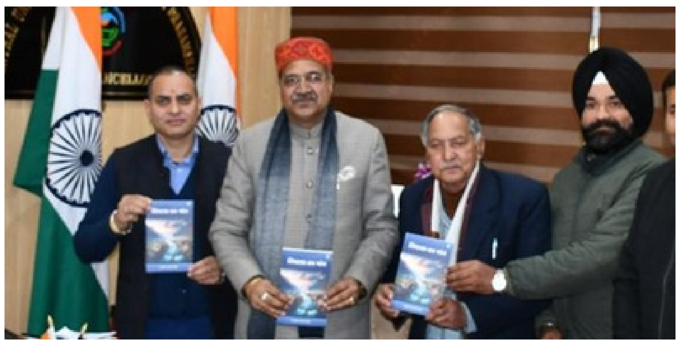

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल द्वारा हिंदी के जाने-माने साहित्यकार, साहित्य अकादमी दिल्ली के वर्ष 2007 के भाषा सम्मान से अलंकृत, हिमाचल सरकार द्वारा 2021 में हिमाचल गौरव से सम्मानित और हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य डॉ. गौतम शर्मा 'व्यथित' के नए उपन्यास 'विपाशा का गांव' का विमोचन किया गया। इस अवसर पर प्रो. बंसल ने कहा कि 'विपाशा का गांव' हिमाचल प्रदेश विशेषकर कुल्लू क्षेत्र की विशिष्ट संस्कृति, जीवन पद्धतियों, आचार-व्यवहार, वेशभूषा और क्षेत्र की विशेषताओं पर समर्पित नवीन दृष्टिकोण से सृजित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है, जो नारी-विमर्श और नारी सशक्तिकरण की दृष्टि से सभी के पढ़ने योग्य है। प्रो. बंसल ने उन्हें इस उपलब्धि के लिए बधाइयाँ दीं और भविष्य में भी ऐसी अमूल्य और जीवन से जुड़ी रचनाओं के लिए प्रेरित किया। डॉ. व्यथित का यह उपन्यास उनकी कृति रेश्मा के बाद उनकी दूसरी महत्वपूर्ण आंचलिक रचना है। दोनों उपन्यास जनजातीय व पर्वतीय महिलाओं के भोगे हुए यथार्थ को लेकर नारी विमर्श की उत्कृष्ट कृतियाँ हैं।

विद्यार्थियों को लक्ष्य हासिल करने के लिए किया प्रेरित

सीयू में डॉ अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र के नवप्रवेशी छात्रों का स्वागत

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर के सभागार में डॉ अम्बेडकर उत्कृष्टता केंद्र के नवप्रवेशी छात्रों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और विशिष्ट अतिथि सुश्री स्वाति वालिया एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर रहे। सरस्वती पूजन के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। इसके बाद केंद्र के समन्वयक और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने भारत सरकार की ओर से चलाए जा रहे इस केंद्र में विद्यार्थियों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में अवगत करवाया। उन्होंने विद्यार्थियों को मन लगाकर अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित किया और उम्मीद जताई कि विद्यार्थी विभिन्न परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके प्रदेश का नाम रोशन करेंगे। वहीं उन्होंने पिछले बैच की उपलब्धियों की चर्चा की और नव प्रवेशित छात्रों के प्रशिक्षण की रूपरेखा पर अपनी बात रखी। गौरतलब है कि सत्र 2024-25 में कुल 100 छात्रों को प्रवेश परीक्षा के माध्यम से प्रवेश दिया गया है। वहीं बतौर विशिष्ट अतिथि सुश्री स्वाति वालिया जिनका चयन हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवा के लिए हुआ है उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए समय प्रबंधन पर विशेष ध्यान देने को कहा। उन्होंने कहा कि संघर्ष चाहे जितना बड़ा हो, हमें अपना धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए| यह धैर्य ही है, जो आपको सफ़लता के शिखर पर ले जाता है। इस मौके पर उन्होंने सफलता के टिप्स भी विद्यार्थियों के साथ साझा किए।वहीं मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा का उद्बोधन प्रेरणा और ऊर्जा से भरा हुआ रहा। उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि नव प्रवेशित छात्रों को विश्वविद्यालय की तरफ से फ्री वाई-फाई, पुस्तकालय और पुस्तकें भी उपलब्ध करवाई जाती हैं। विश्वविद्यालय हमेशा से प्रयासरत रहा है कि विद्यार्थी अपने सपनों को साकार करें। अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर ने अपने संबोधन के माध्यम से छात्रों का उत्साह बढ़ाया।

उन्होंने कहा कि संघर्ष के बाद मिली कामयाबी छात्र के जीवन में बड़ा बदलाव लाती है। समय लगता है लेकिन जब मेहनत रंग लाती है तो वह संघर्ष बहुत अच्छा लगता है। कार्यक्रम में संकाय सदस्य डा. सचिन उपमन्यु, डॉ अंकिता, डॉ रीना और डॉ राजकिशोर सिंह उपस्थित रहे।

भारतीय ज्ञान परम्परा के आयामों से कराया रूबरू

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र की ओर से मासिक व्याख्यान माला के अंतर्गत "भारत की सनातन ज्ञान परम्परा का विश्व संस्कृति के लिए अवदान" विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य वक्ता के रूप में अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति न्यास के संरक्षक प्रो. मोहन लाल छीपा ने समृद्ध भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वेदों में दुनिया के सब विज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा व मानव जीवन के सब आयामों का वर्णन मिलता है एवं इसकी विस्तृत व्याख्या भी मिलती है। प्रसिद्ध आर्थिक इतिहासकार अंगस मेडिसन ने अपने विश्व के आर्थिक इतिहास से संबंधित पुस्तक में लिखा है कि पहली शताब्दी में भारत का विश्व व्यापार में लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा हुआ करता था, मगर विदेशी आक्रमण व दासता के कारण वह स्थिति न केवल कम हुई बल्कि भारत के ज्ञान -विज्ञान विषयक ग्रंथों को विदेशियों द्वारा लूटकर ले जाने से राष्ट्रीय ज्ञान-संपदा का क्षरण भी हुआ । नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लागू होने पर इस दिशा मे नई उम्मीद जगी है।

केंद्रीय विश्वविद्यालय और डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय के बीच शुरु होंगे ज्वाइंट सर्टिफिकेट- डिप्लोमा कोर्सेस

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और डा. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर जल्द ही सहयोगात्मक और संयुक्त कार्यक्रमों के साथ इंटर्नशिप, शोध प्रबंध और अनुभवात्मक शिक्षा के लिए छात्र विनिमय कार्यक्रम शुरू करने जा रहे हैं। इसी संबंध में दोनों विश्वविद्यालयों ने विचार-विमर्श करके इस बारे में जल्द से जल्द आगामी कदम उठाने का फैसला लिया है। इसमें सहयोगात्मक और संयुक्त कार्यक्रमों में भाग लेने वाले विभागों में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय से भारतीय ज्ञान प्रणाली, बायोइनफॉरमैटिक्स, श्रम अध्ययन, योग और कल्याण और पर्यावरण जागरूकता विषय पर शुरू होने वाले ज्वाइंट सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्सेस में भारतीय ज्ञान प्रणाली में डा. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से वैदिक अध्ययन विभाग, बायोइनफॉरमैटिक्स विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय से कम्प्यूटेशनल जीव विज्ञान और जैव सूचना विज्ञान केंद्र व डा. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से माइक्रोबायोलॉजी, जूलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी, वनस्पति विज्ञान विभाग, श्रम अध्ययन विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र विभाग और डा. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से अर्थशास्त्र विभाग, योग और कल्याण विषय पर केंद्रीय विश्वविद्यालय से योग अध्ययन केंद्र और हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर से योग शिक्षा विभाग, पर्यावरण जागरूकता विषय पर दोनों विश्वविद्यालयों से पर्यावरण विज्ञान विभाग की सहभागिता रहेगी। केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने इस पहल को नई पहले बताते हुए कहा कि दोनों संस्थान विद्यार्थियों को बेहतर से बेहतर शिक्षा मुहैया कराने के लिए प्रयासरत हैं। पहली बार इस तरह से ज्वाइंट डिग्री, डिप्लोमा कोर्स शुरू होना महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पौंग डैम में विश्व वेटलैंड डे दिवस पर कई प्रतियोगिताओं का आयोजन

विनीत सिंह फोटोग्राफी प्रतियोगिता में रहा अव्वल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश के वन एवं वन्यजीव विभाग की ओर से विश्व वेटलैंड डे दिवस के अवसर पर पौंग डैम में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कई प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ । विभिन्न शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों ने इन प्रतिस्पर्धाओं में प्रतिभाग किया । इन विभिन्न प्रतियोगिताओं में केंद्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने भी बढ़-चढ़ कर भाग लिया और कई प्रतियोगिताओं में सफलता हासिल की। इस दौरान आयोजित फोटोग्राफी प्रतियोगिता में केंद्रीय विश्वविद्यालय के विनीत सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। गौरतलब है कि हर साल हिमाचल प्रदेश के वन एवं वन्यजीव विभाग की ओर से विश्व वेटलैंड डे दिवस के अवसर पर पौंग डैम में कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इस बार भी बोटिंग, फोटोग्राफी प्रतियोगिता और पक्षी अवलोकन (बर्ड वॉचिंग) प्रतियोगिता जैसी कई रोचक गतिविधियाँ आयोजित की हुई, जिनमें विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के लगभग 50 विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। फोटोग्राफी प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपने बेहतरीन फोटोग्राफी कौशल का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के विनीत सिंह ने उत्कृष्ट फोटोग्राफी प्रस्तुत कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। उनकी इस उपलब्धि पर उन्हें सम्मानित किया गया और उनकी फोटोग्राफी को सराहा गया। वहीं बर्ड वॉचिंग प्रतियोगिता में केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्रों का वर्चस्व रहा। विद्यार्थियों ने शानदार प्रदर्शन किया और शीर्ष तीन स्थानों को प्राप्त किया । इसमें प्रथम स्थान पर आस्था, चाहक, पंकज, वैशाली और अक्षय, द्वितीय स्थान पर चंदर शेखर, पंकज, आशीष, विवेक और शबनम और तृतीय स्थान: ओजस्विता, वनीता, प्रीति, प्रिशा और आरुषि रही। संरक्षक वन (Conservator of Forest) सारा भाई पटेल और डीएफओ (DFO) वन्यजीव हमीरपुर रिग्नाल्ड रॉयस्टन ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल, अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार, अधिष्ठाता छात्र कल्याण और "जन्तु" विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. सुनील कुमार ने "जन्तु" विज्ञान विभाग के सभी प्रोफेसरों और उन विद्यार्थियों को बधाई दी, जिन्होंने विश्व वेटलैंड डे दिवस पर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लिया और पुरस्कार जीतकर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

सीयू जुलाई 2025 से शुरू करेगा आनलाइन कार्यक्रम

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में इसी सत्र से अर्थशास्त्र विभाग, इतिहास विभाग और राजनीति विज्ञान में एमए, एमसीए और एमबीए कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से शुरू किए जा रहे हैं। इसी संबंध में धौलाधार परिसर-एक के सेमिनार हाल में दो दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। इसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने की। वहीं कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. विशाल सूद, डॉ. ज्योत्सना दीक्षित, अतिरिक्त निदेशक, राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा नवाचार केंद्र, इग्नू और प्रो. अनीता प्रियदर्शनी निदेशक, स्टाफ ट्रेनिंग एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन (स्ट्राइड) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) मौजूद रहे। विवि के कुलसचिव ने डॉ. ज्योत्सना दीक्षित और प्रो. अनीता प्रियदर्शनी को सम्मानित किया। मंच का संचालन करते हुए दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के सहायक निदेशक डा. हरीश गौतम ने सभी का स्वागत किया। उन्होंने मुख्य अतिथियों का संक्षिप्त परिचय दिया। वहीं केंद्रीय विश्वविद्यालय के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. विशाल सूद ने डॉ. ज्योत्सना दीक्षित और प्रो. अनीता प्रियदर्शनी का स्वागत करते हुए हर्ष जताया कि उनके मार्गदर्शन में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर मौजूद संकाय सदस्यों को कार्यशाला का महत्व बताया। इसके बाद कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा ने सभी का अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि कुलपति प्रो. बंसल के मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय लगातार अपनी छवि में तरक्की कर रहा है। इस मौके पर संकाय सदस्यों, तकनीकी स्टाफ को ई-सामग्री (ई-लर्निंग सामग्री) का विकास, वीडियो व्याख्यान का विकास, ओईआर का उपयोग और यूजीसी-डीईबी दिशानिर्देशों के अनुसार ऑनलाइन कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं से परिचित करवाया गया। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के सह-निदेशक डा. चमन लाल ने सभी का इस कार्यशाला में भाग लेने पर आभार जताया।

विश्वविद्यालय की पहल, जल्द ही अन्य ऑनलाइन कोर्सेज भी होंगे शुरू- प्रो. बंसल

धर्मशाला। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने केंद्रीय विश्वविद्यालय के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की कमेटी को इस कार्यशाला के आयोजन की बधाई दी और कहा कि विश्वविद्यालय एक नई पहल इसी साल करने जा रहा है। कुछ ऑनलाइन कार्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं। जल्द ही उनकी संख्या में इजाफा किया जाएगा। उन्होंने इग्नू से आईं अधिकारियों का भी स्वागत किया और कहा कि निश्चित रूप से इस दो दिवसीय कार्यशाला को आयोजित किए जाने का उद्देश्य पूरा होगा। विश्वविद्यालय अब शोध के साथ हर क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा रहा है। यह पहल भी उसी दिशा में की जा रही है। कुछ समय से विश्वविद्यालय अपनी पहचान को और सशक्त बनाने में कामयाब हुआ है।

सीयू में ऑनलाइन डिग्री प्रोग्राम आरंभ करने को लेकर शिक्षक किए गए प्रशिक्षित

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में शुरू किए जा रहे ऑनलाइन डिग्री प्रोग्राम को शुरू करने को लेकर संकाय सदस्यों और तकनीकी स्टाफ को दिये जा रहे प्रशिक्षण संबंधी कार्यशाला का शुक्रवार को समापन हो गया। इसमें उन्हें ऑनलाइन प्रोग्राम संबंधी बारीकियों की जानकारी दी गई।

गौरतलब है कि विश्वविद्यालय इसी सत्र से पांच ऑनलाइन कार्यक्रम शुरू करने जा रहा है, उसी कड़ी के अंतर्गत विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं की बारीकियों के प्रशिक्षण हेतु कार्यशाला आयोजित की गई । इसमें इग्नू नई दिल्ली से प्रो. अनीता प्रियदर्शिनी एवं डॉ. ज्योत्सना वशिष्ठ ने विषय विशेषज्ञ के रूप में सभी शिक्षकों को ऑनलाइन प्रोग्राम के क्रियान्वयन के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार ने की। उन्होंने विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर डिस्टेंस एंड ऑनलाइन एजुकेशन की इस पहल की सराहना की। उन्होंने कहा कि इस पहल से कई विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। इस अवसर पर केंद्रीय विश्वविद्यालय के दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक प्रो. विशाल सूद, सह-निदेशक डा. चमन लाल और सहायक निदेशक डा. हरीश गौतम ने सभी का इस कार्यशाला में भाग लेने पर आभार जताया।

पंडित दीनदयाल के विचारों पर चलने का लिया संकल्प

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार पंच प्रण पहल कार्यक्रम के अंतर्गत तथा दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र की पहल पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की 56 वीं पुण्यतिथि पर "पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की वैचारिकी में पंच प्रण" विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता आकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार उपस्थित रहे। वहीं मौके पर मुख्य वक्ता के रूप में विश्वविद्यालय के अम्बेडकर अध्ययन केंद्र के सहायक आचार्य डॉ किस्मत कुमार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को श्रद्धांजलि देते हुए पंच प्रण के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के सपनों को साकार करने की दिशा में भारत सरकार के द्वारा निर्धारित पंच प्रण मील का पत्थर साबित होंगें। पंच प्रण की यह अवधारणा हमें महान विचारक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की वैचारिकी में स्पस्ट रूप से दिखाई देती है।

उन्होंने पंच प्रण में शामिल विकसित भारत, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, विरासत पर गर्व, एकता व एकजुटता एवं नागरिक कर्तव्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए एक -एक बिंदू की वर्तमान समय में सार्थकता पर प्रकाश डाला और कहा कि इन पंच प्रणों का अनुसरण ही भारत राष्ट्र को पुनः विश्व गुरु और सोने की चिड़िया बना सकता है और हम 2047 तक पूर्ण विकसित बन सकते हैं। वहीं मुख्य अतिथि प्रो प्रदीप कुमार ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जैसे महा पुरुषों के दिखाए रास्ते पर चलकर ही अपना, अपने परिवार, समाज व राष्ट्र का कल्याण कर सकते हैं। उन्होंने उपस्थित युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि पंच प्रण का संकल्प लेकर तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों पर चल कर ही देश वासियों और राष्ट्र की आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। इस अवसर पर प्रो प्रदीप कुमार ने उपस्थित सभी लोगों को पंच प्रण का संकल्प दिलवाया। इससे पूर्व डॉ चंद्रशेखर ने सभी का स्वागत किया तथा डॉ विकास नड्डा ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो मोहिंदर सिंह, प्रबंधन विभाग के डीन प्रो संजीव गुप्ता, अध्यक्ष प्रो दीपांकर शर्मा, योग अध्ययन केंद्र के निदेशक डॉ सुनील कुमार, डॉ प्रतिवाश्री, डॉ संजय कुमार, डॉ सुनीता, डॉ चंद्र शेखर व श्री करतार सिंह उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन 'विश्वविद्यालय पंच प्रण पहल' के परिसर 2 समन्वयक डॉ उदय भान सिंह ने किया।

सीयू ने आयोजित करवाई इन्टर जोनल महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता

धर्मशाला। भारतीय विश्वविद्यालय संघ के सौजन्य से हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला में चार दिवसीय अखिल भारतीय इंटर जोनल महिला भारोत्तोलन प्रतियोगिता साई इंडोर स्टेडियम में संपन्न हुआ। इस उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर कांगड़ा के सांसद डॉ. राजीव भारद्वाज तथा विशिष्ट अतिथि के तौर पर सोरोखैबम विन्द्यारानी देवी, (भोरोत्तोलक नेताजी, सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान पटियाला) मौजूद रहीं। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एसपी बंसल ने की। इस मौके पर केंद्रीय विवि के खेल निदेशक सुमन शर्मा ने कुलपति प्रो. एसपी बंसल का और अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. सुनील ठाकुर ने विशिष्ट अतिथि स्वागत किया। चैंपियनशिप में देश भर के विभिन्न 78 विश्वविद्यालयों के 320 से अधिक खिलाड़ियों ने सहभाग किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, कांगड़ा सांसद डॉ. राजीव भारद्वाज ने कहा कि देश और समाज तभी उन्नति कर सकता है, जब उसके युवाओं में अनुशासन होगा। यह अनुशासन सबसे अधिक खेल के मैदानों से सीखा जा सकता है। महिला खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि देश की बेटियों के प्रति आज समाज की सोच बदली है और इसका पूरा श्रेय महिलाओं को ही जाता है। वे अपनी मेहनत के दम पर नया मुकाम हासिल कर रही हैं और खेल के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर पा रही हैं। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एसपी बंसल ने कहा कि संसाधनों के अभाव में भी विश्वविद्यालय चौथी बार भारोत्तोलन प्रतियोगिता का आयोजन कर रहा है। विश्वविद्यालय के सभी प्राध्यापक, शोधार्थी, विद्यार्थी तथा शिक्षकेतर कर्मचारियों का उन्हें सहयोग मिलता रहा है। कुलपति ने विशेष तौर पर सोरोखैबम विन्द्यारानी देवी के संघर्षों पर प्रकाश डाला और उनकी कामयाबी की कहानी को खिलाड़ियों से साझा किया। प्रतियोगिता के समापन समारोह के मुख्य-अतिथि नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने विश्विद्यालय को प्रतियोगिता के सफल आयोजन की बधाई दी। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भारोत्तोलन केवल भार उठाने की क्षमता का खेल नहीं है, यह उम्मीदों और सपनों को भी ऊपर उठाने के जज्बे का नाम है। कर्नममल्लेश्वरी और मीरा बाई चानू का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि शक्ति जेंडर से नहीं, डिटरमिनेशन से आती है। वहीं विशिष्ट अतिथि विन्द्यारानी ने विवि प्रशासन के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि यहां आए खिलाड़ी भी आगे जाकर भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं। मेहनत के दम पर वे ओलंपिक तक जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि वे हमेशा खिलाड़ियों की मदद के लिए तैयार हैं, किसी भी तरह के सुझाव के लिए वे विन्द्यारानी से संपर्क कर सकती हैं। खेल निदेशक डॉ. सुमन शर्मा ने कहा कि कुलपति के ध्येय से ही यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक आयोजित हो पा रहा है। इस आयोजन के लिए उन्होंने विवि परिवार के सभी सदस्यों, प्रतिभागियों और उनके कोच के प्रति आभार प्रकट किया। अंत में अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर ने सभी खिलाड़ियों को खेल शपथ दिलाई और धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस खबर की वीडियो के लिए यहां पर या हेडलाइन पर क्लिक करें या QR कोड स्कैन करे

बिग डाटा एनालिटिक्स की महत्ता से परिचित हुए सीयू के संकाय सदस्य

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के शिक्षा विभाग और आईआईटी गुवाहाटी के संयुक्त तत्त्वावधान में धर्मशाला में "बिग डाटा एनालिटिक्स" पर पांच दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम (Faculty Development Program) आयोजित हुआ। इसका उद्घाटन शिक्षा स्कूल के अधिष्ठाता और विभागाध्यक्ष प्रो. मनोज सक्सेना ने किया। इस दौरान उन्होंने बिग डाटा एनालिटिक्स पर अपने विचार साझा किए और इस क्षेत्र में हो रहे विकास पर विस्तार से चर्चा की । कार्यक्रम के आयोजक डॉ. ललित मोहन शर्मा और सह-आयोजक डॉ. अमरीक सिंह ठाकुर ने भी अपने विचार व्यक्त किए और कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. ललित शर्मा ने कार्यशाला में होने वाली विभिन्न गतिविधियों और आगामी तकनीकी अवसरों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि बिग डाटा एनालिटिक्स में आने वाले समय में कई महत्वपूर्ण रोजगार अवसर और अनुसंधान के नए रास्ते खुल सकते हैं, जिनसे शिक्षकों और शोधार्थियों को लाभ मिलेगा। वहीं कार्यक्रम में IIT गुवाहाटी से आए विशेषज्ञ, अनितान्शु राजन ने अपने विचार प्रस्तुत किए। सत्र में, शिक्षकों और शोधार्थियों को Tableau Desktop के विभिन्न प्रकार के उपयोगों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

कार्यक्रम के दौरान प्रत्येक प्रतिभागी को व्यक्तिगत रूप से Tableau Desktop सॉफ़्टवेयर के उपयोग के तरीके समझाए गए, ताकि वे इसका बेहतर तरीके से उपयोग कर सकें। वहीं दूसरे सत्र में Power BI Desktop के बारे में जानकारी प्रदान की गई। विशेषज्ञों ने इस सॉफ़्टवेयर के उपयोग को विस्तार से समझाया और बताया कि किस प्रकार इसका उपयोग डेटा विश्लेषण और रिपोर्टिंग के कार्यों को सरल और प्रभावी बनाता है। सभी प्रतिभागियों को Power BI Desktop के विशेष पहलुओं पर भी ध्यान केंद्रित करते हुए सिखाया गया, ताकि वे इसे अपनी कार्यशाला और अनुसंधान में आसानी से उपयोग कर सकें।

कार्यशाला में प्रौद्योगिकी, डेटा एनालिटिक्स, मशीन लर्निंग, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, और संबंधित क्षेत्रों में नवीनतम ज्ञान साझा किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को बिग डाटा एनालिटिक्स के सिद्धांतों और उनके वास्तविक जीवन उपयोग के बारे में जानकारियों से लैस करना है, जिससे वे अपने पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बना सकें। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में बिग डाटा के महत्व को समझाना और इस तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देना है, ताकि आने वाले समय में इस क्षेत्र में नई तकनीकी प्रगति हो सके और शोध कार्यों के नए अवसर उपलब्ध हो सकें।

अटल श्री सम्मान' से सम्मानित हुए शोधार्थी

धर्मशाला। राष्ट्रीय कवि संगम द्वारा जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी में 9 मार्च 2025 को आयोजित कार्यक्रम में अटल सेवा समिति, लखनऊ द्वारा साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए न्यू मीडिया विभाग के शोधार्थी सर्वेश कुमार मिश्र को 2024-25 का 'अटल श्री सम्मान' प्रदान किया गया।

समारोह में राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगदीश मित्तल सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। सर्वेश कुमार मिश्र ने इस सम्मान को अपनी साहित्यिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव बताते हुए कहा कि यह पुरस्कार उन्हें आगे और बेहतर कार्य करने की प्रेरणा देगा। उन्होंने अपने सभी मार्गदर्शकों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

Book Review

"Unveiling the Trails: Kukumseri to Rohtang" by N.R. Gopal

"Unveiling the Trails: Kukumseri to Rohtang" by N.R. Gopal is a captivating journey through one of Himachal Pradesh's most breathtaking and rugged landscapes. Part travel memoir, part cultural chronicle, the book weaves personal reflection with rich geographical and ecological detail, offering readers both a spiritual and sensory immersion into the heart of the Himalayas.

This literary depth is no surprise, given Dr. Gopal's extensive background in literature and translation. A seasoned scholar and author, he began his literary journey with A Critical Study of Novels by Anita Desai in 1995 and went on to co-edit Indian English Poetry & Fiction. His flair for bringing diverse voices into focus is further evident in his Hindi translation of Ravi Kumar's Glimpses of Hindu Genius, now in its fourth edition. His recent academic works—such as Survivance in Indigenous American Literature, Indian Aesthetics Across Time & Tradition, and Women's Voices: The Role of Female Protagonists in Native American Novels—highlight his nuanced understanding of identity, resilience, and culture.

What makes Unveiling the Trails stand out is Dr. Gopal's ability to map inner landscapes of thought and emotion alongside the outer terrain. The challenges of the journey, the unpredictable Himalayan weather, and serendipitous encounters become mirrors to deeper introspection — a spiritual expedition as much as a physical one.

The book is also a quiet but firm call toward ecological awareness. Dr. Gopal subtly underscores the fragile beauty of the Rohtang region and the urgent need to preserve it, without ever sounding didactic. His deep reverence for the land and its people shines through every chapter. Whether you're an avid trekker, a lover of mountain cultures, or someone seeking solitude in words, Unveiling the Trails is a book that leaves footprints on the mind long after you've turned the last page.

By Deepak Vaishnav

Letters to Editor

I am writing to suggest the active involvement of various departments in our university newsletter. Encouraging departments to contribute articles, research highlights, event updates, and creative works will enrich the content and reflect our diverse academic culture. This initiative will foster collaboration, showcase departmental achievements, and engage a wider audience. A formal call for contributions can be circulated to ensure enthusiastic participation.

-Jitender Thakur

I would like to request that the university newsletter be made available in every department. This will help students stay informed about campus activities, achievements, and opportunities across disciplines.

Easy access to the newsletter can spark interest and inspire more students to actively participate in upcoming events and contribute content.

It will also strengthen the sense of community and engagement within the university. Besides it will increase students' participation.

-Prtishtha Kashyap

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणाली पर सेमिनार का आयोजन

धर्मशाला। पत्रकारिता और जनसंचार विभाग ने आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) के सहयोग से हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (CUHP) में "राष्ट्रीय शिक्षा नीति और भारतीय ज्ञान प्रणाली" विषय पर एक सफल सेमिनार का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो. प्रदीप कुमार, डीन अकादमिक, CUHP रहे। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के महत्व और आधुनिक शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को एकीकृत करने की आवश्यकता पर एक ज्ञानवर्धक व्याख्यान दिया। उन्होंने बहु-विषयक अध्ययन और भारत की समृद्ध शैक्षिक विरासत को समकालीन शैक्षिक ढांचे में बनाए रखने के महत्व पर बल दिया। उनके बाद IQAC के निदेशक डॉ. मोहिंदर ने NEP के कार्यान्वयन की रणनीतियों और उच्च शिक्षा में गुणवत्ता आश्वासन की भूमिका पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उन्होंने बताया कि कैसे शैक्षणिक संस्थान पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को अपनाते हुए शैक्षणिक उत्कृष्टता और वैश्विक प्रासंगिकता सुनिश्चित कर सकते हैं। पत्रकारिता, जनसंचार और नव मीडिया स्कूल, CUHP की डीन डॉ. अर्चना कटोच ने भी सभा को संबोधित किया। उन्होंने NEP के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने और भारत की बौद्धिक परंपराओं को संरक्षित करने में मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म और जनसंचार कैसे शिक्षा प्रणाली के पुनर्निर्माण में सहायक हो सकते हैं। सेमिनार का समन्वयन प्रख्यात प्रोफेसर आदित्य कांत ने किया, जिन्होंने इस कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभाई।

प्रो. मनोज सक्सेना एनसीटीई के पाठ्यक्रमों की रूपरेखा निर्मित करने को गठित राष्ट्रीय समिति के सदस्य मनोनीत

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षा संकाय के अधिष्ठाता एवं अध्यक्ष प्रो. मनोज कुमार सक्सेना को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) के विभिन्न पाठ्यक्रमों की रूपरेखा निर्मित करने की राष्ट्रीय समिति का सदस्य नामित किया है । इस समिति का कार्य आई. टी. ई. पी. (ITEP) शारीरिक शिक्षा, आई. टी. ई. पी. (ITEP) योग शिक्षा, आई. टी. ई. पी. (ITEP) कला शिक्षा, आई. टी. ई. पी. (ITEP) संस्कृत शिक्षा, बी. एड. (एक वर्षीय) एवं बी. एड. (द्वि वर्षीय) से संबंधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) पाठ्यक्रम के स्वरुप और पाठ्यक्रमों में सुझावों को अंतिम रूप प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त प्रो. मनोज कुमार सक्सेना यूजीसी की राष्ट्रीय स्थायी समिति के सदस्य भी हैं। वर्तमान में प्रो. मनोज कुमार सक्सेना हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में कुलानुशासक के पद पर कार्यरत हैं। केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सत प्रकाश बंसल ने प्रोफेसर मनोज सक्सेना को बधाई दी है और इसे शिक्षा के क्षेत्र में प्रो. सक्सेना के समर्पण और विशेषज्ञता का प्रमाण बताया। वहीं विश्वविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों ने भी प्रोफेसर सक्सेना को इस मनोनयन के लिए बधाई दी है। प्रो. सक्सेना ने भी इस अवसर के लिए सबका आभार व्यक्त किया।

डोगरी भाषा में पाठ्यपुस्तक निर्माण हेड कार्यशाला का आयोजन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय एवं भारतीय भाषा समिति की ओर से डोगरी भाषा में उच्च शिक्षा हेतु पाठ्यपुस्तक विकास पर लेखक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पद्मश्री हरमेंद्र सिंह बेदी उपस्थित रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की डिप्टी सेक्रेट्री डॉ. शालिनी और कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने की। प्रो. विशाल सूद ने सभी का स्वागत किया और इस दो दिवसीय कार्यशाला के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।

कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों से लगभग 20 प्रतिभागी उपस्थित हुए, जिन्हें पाठ्यक्रम विकसित करने से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कुलाधिपति पद्मश्री हरमेंद्र सिंह बेदी ने भारतीय भाषाओं के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाओं को बनाया जाना चाहिए। उन्होंने डोगरी भाषा को पंजाबी से जोड़ने, इसे पाठ्यपुस्तकों में शामिल करने और इसके इतिहास व साहित्य पर शोध को बढ़ावा देने की जरूरत पर बल दिया। वहीं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० सत प्रकाश बंसल ने भारतीय भाषाओं की विविधता और शिक्षा के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि भारत का संविधान 22 राजभाषाओं को मान्यता देता है, लेकिन यहां हजारों अन्य भाषाएं तथा लाखों बोलियां बोली जाती हैं। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी नागरिकों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले। त्रिभाषा और बहुभाषा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कई पहल की गई हैं।

उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि आज डिजिटलीकरण और शब्दावली की कमी जैसी चुनौतियों का सामना हो रहा है, लेकिन इसके बावजूद इन भाषाओं को सामाजिक विज्ञान, प्रबंधन, और अन्य शैक्षिक क्षेत्रों में बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

विकसित भारत यूथ पार्लियामेंट-2025 में युवाओं किया सहभाग

धर्मशाला। विकसित भारत यूथ पार्लियामेंट-2025 का आयोजन युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार की ओर से किया गया, जिसमें युवाओं को नई दिल्ली स्थित भारत की संसद में अपने विचार रखने का सुनहरा अवसर मिलेगा। जिला कांगड़ा के युवाओं के चयन हेतु मंत्रालय की ओर से केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। वहीं कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल की अध्यक्षता में केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला परिसर को नामित किया गया ।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत मंत्रालय की ओर से देश भर के 300 जिलों से एनएसएस और नेहरू युवा केंद्र के माध्यम से 18 से 25 वर्ष तक के युवाओं का चयन किया गया । यह चयन प्रक्रिया तीन चरणों में रही । प्रथम चरण में 18 से 25 वर्ष के युवाओं ने माई भारत पोर्टल पर अपना पंजीकरण किया तथा विकसित भारत विषय पर एक मिनट का वीडियो अपलोड किया ।

इसके उपरांत मंत्रालय की ओर से चिन्हित जिला स्तरीय नोडल केंद्रों के माध्यम से उनका परीक्षण किया गया और उनमें से हर जिले से 150 युवाओं को ऑफलाइन मोड में जिला केंद्रों पर निर्धारित तिथि को भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से चयनित किया गया। पंजीकरण हेतु माई भारत पोर्टल की साइट खुली रही और उसमें 9.3.2025 तारीख तक पंजीकरण किया जा सका। प्रतिभागियों द्वारा अपलोड किए गए वीडियो को विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा निर्धारित की गई समितियों द्वारा परीक्षण किया जाएगा । जिनमें 150 युवाओं को केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला में ऑफलाइन माध्यम से भाषण प्रतियोगिता के माध्यम से अपने विचार रखने का अवसर मिला, जिसमें से 10 युवाओं का चयन किया गया, जो प्रदेश की राजधानी शिमला में द्वितीय चरण की राज्यस्तरीय भाषण प्रतियोगिता में भाग लेंगे । जिसमें से चयनित युवा देश की संसद नई दिल्ली में अपने विचार रखेंगे ।

इस संबंध में केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने हर्ष जताते हुए कहा कि इससे पहले भी विश्वविद्यालय को "यंग लीडर डायलाग" में केंद्र में हिमाचल का प्रतिनिधित्व करने का दायित्व सौंपा गया था, जिसे विश्वविद्यालय ने बखूबी निभाया। अब मंत्रालय की ओर से फिर से दायित्व सौंपी गई है। उन्होंने प्रदेश के समस्त युवाओं से इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया है। केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से इस कार्यक्रम हेतु डा. मलकीयत सिंह को समन्वयक नामित किया गया ।

एआई: आपका त्वरित कानूनी मार्गदर्शक

धर्मशाला। राज कॉलेज से घर लौट रहा था, जब एक ट्रैफिक पुलिसकर्मी ने उसे रोका। "आपने गति सीमा पार कर दी," अधिकारी ने कहा और भारी जुर्माने की पर्ची थमा दी। राज को यकीन था कि उसने गति सीमा का उल्लंघन नहीं किया था, लेकिन उसे संबंधित ट्रैफिक कानूनों की जानकारी नहीं थी कि वह इस दावे को कैसे चुनौती दे सकता है। हताश होकर उसने जुर्माना भर दिया और सोचता रहा कि क्या अपने अधिकारों को तुरंत जानने का कोई तरीका है ?

क्या हो अगर राज के पास एआई-पावर्ड कानूनी सहायक होता? वह एआई से सीधे पूछ सकता था, "क्या मैं इस जुर्माने को चुनौती दे सकता हूँ?" और उसे तुरंत ट्रैफिक कानूनों, कानूनी प्रक्रियाओं और यहां तक कि अपील पत्र के लिए एक टेम्पलेट की जानकारी मिल जाती। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अब इस क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला रही है। चाहे वह अनुचित किराया वृद्धि हो, कार्यस्थल विवाद हो, या अचानक कानूनी समस्या हो—एआई अब लोगों को कानूनी जानकारी आसानी से उपलब्ध करा रहा है। यह उन्हें जागरूक बनाकर विशेषज्ञ की मदद के बिना भी निर्णय लेने में सक्षम बना रहा है।

भारी कानूनी पुस्तकों के पन्ने पलटने या ऑनलाइन घंटों तक जानकारी खोजने के दिन अब बीत चुके हैं। एआई-पावर्ड प्लेटफॉर्म और चैटबॉट अब कानूनी मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं, जटिल कानूनों को आसान भाषा में समझा रहे हैं। DoNotPay जैसे ऐप (जिसे "दुनिया का पहला रोबोट वकील" भी कहा जाता है) उपयोगकर्ताओं को जुर्माने, कानूनी शुल्क और अन्य मामलों में सहायता प्रदान करते हैं। इसी तरह, सरकारी वेबसाइटों पर एकीकृत एआई चैटबॉट नागरिकों को उनके अधिकारों को समझने में मदद कर रहे हैं, चाहे वह उपभोक्ता संरक्षण हो या श्रम कानून। कानून केवल विशेषज्ञों के लिए सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह हर किसी के लिए सुलभ होना चाहिए। एआई की मदद से, कानूनी जानकारी अब केवल पुस्तकों और वकीलों तक सीमित नहीं है—यह अब आपकी जेब में है, तैयार है जब भी आपको इसकी ज़रूरत हो।

-फ़ीचर डेस्क

सीयू ने साई के साथ मिलकर किया पिंक मैराथन/फिटनेस रैली का आयोजन

धर्मशाला। केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश ने भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) उत्कृष्टता केंद्र, धर्मशाला के सहयोग से 9 मार्च 2025 को प्रातः 10 बजे एक भव्य पिंक मैराथन/फिटनेस रैली का आयोजन किया। यह आयोजन ऊर्जा, उत्साह और महिला सशक्तिकरण का एक शानदार उत्सव था। पिंक मैराथन/फिटनेस रैली को SAI स्टेडियम गेट से माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल द्वारा झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

उन्होंने प्रतिभागियों को प्रेरणादायक शब्दों से संबोधित किया और विश्वविद्यालय की महिलाओं के सशक्तिकरण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को दोहराया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित अतिथियों की उपस्थिति रही, जिनमें प्रो. (सेवानिवृत्त) कैलाश चंद्र शर्मा (पूर्व कुलपति, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय) तथा जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), दिल्ली विश्वविद्यालय और कुमाऊं विश्वविद्यालय के विशिष्ट अतिथि शामिल थे।

इसके अलावा, प्रो. सुमन शर्मा (खेल निदेशक एवं रजिस्ट्रार), प्रो. ए. के. महाजन (परीक्षा नियंत्रक) और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति ने इस अवसर को और भी गरिमामय बना दिया। इस कार्यक्रम की संयोजक प्रो. सूर्या रश्मि रावत (अध्यक्ष, SPARSH एपेक्स समिति एवं महिला अध्ययन एवं विकास केंद्र) रहीं, जबकि सह-संयोजक की भूमिका में डॉ. रुचि शर्मा थीं। छात्र समन्वयकों – श्री गगन, श्री विशाल, श्री रोहित मेहता और सुश्री कंचन ने इस मैराथन के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।शारदा गर्ल्स हॉस्टल, केंद्रीय विश्वविद्यालय और SAI हॉस्टल, धर्मशाला की 100 छात्राओं का संकल्पबद्ध होकर दौड़ना, महिलाओं की शक्ति और संकल्प का एक प्रभावशाली प्रतीक था।

वातावरण बेहद जोशपूर्ण था, जहाँ संकाय सदस्य और दर्शक प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन कर रहे थे। डॉ. अदिति शर्मा (CCI सदस्य, धौलाधार कैंपस) और डॉ. प्रीति सिंह (SPARSH एपेक्स एवं UCC सदस्य) ने छात्राओं को प्रेरित किया और उन्हें फिटनेस और आत्मविश्वास को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 की थीम "त्वरित कार्रवाई (Accelerate Action)" इस पूरे आयोजन में प्रतिध्वनित होती रही, जिससे लैंगिक समानता की दिशा में ठोस कदम उठाने की आवश्यकता को बल मिला।

महिला कमर्चारियों को पौधे देकर जताया प्यार और आभार

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कुलपति प्रो. बंसल ने दी बधाई

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस मौके पर धर्मशाला परिसर की सभी शिक्षकेतर और गैर शिक्षकेतर कमर्चारियों को सम्मानित किया गया। "प्यार और आभार" शीर्षक से आयोजित इस कार्यक्रम का आयोजन अधिष्ठाता छात्र कल्याण और Sustainability क्लब ने Curiosity क्लब, Cultural क्लब (एचपीकेवी) और स्पर्श एपेक्स कमेटी के सहयोग से किया। इसमें बतौर मुख्य अतिथि अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. सुनील ठाकुर मौजूद रहे। इस मौके पर डा. मनप्रीत अरोड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए मुख्य अतिथि का इस कार्यक्रम में भाग लेने पर आभार जताया। उन्होंने कहा कि यह पहला अवसर है पर जहां विश्वविद्यालय का शिक्षकेतर और गैर शिक्षकेतर महिला स्टाफ एक साथ उपस्थित है। यह गर्व की बात है।

वहीं मुख्य अतिथि ने कहा कि महिला किसी भी क्षेत्र में पुरूषों से पीछे नहीं है। महिलाओं का हर क्षेत्र में पुरूषों के बराबर योगदान है। फिर चाहे वो शिक्षा का क्षेत्र हो, राजनीति हो या फिर सरकारी कार्यालय। महिलाएं एक धुरी की तरह हैं। वह परिवार के साथ-साथ अपने कामकाज को भी बखूबी संभालती हैं। मायका, ससुराल हो या फिर कार्यालय उनका योगदान सराहनीय है। केंद्रीय विश्वविद्यालय में भी महिला संकाय सदस्य हैं और शिक्षकेतर कमर्चारी हैं, जो सभी के बराबर कामकाज संभाल रही हैं। यह सराहनीय है। वहीं विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने इस आयोजन के लिए अधिष्ठाता छात्र कल्याण और एचपीकेवी की महिला संकाय सदस्यों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि यह एक सराहनीय प्रयास है। भविष्य में भी इस तरह के आयोजन हों इसके लिए प्रयास किया जाएगा। विश्वविद्यालय परिवार को एक मुकाम तक पहुंचाने में महिला कर्मचारियों का योगदान सराहनीय है। इस अवसर पर डा. प्रिया शर्मा ने पहाड़ी कविता, डीईओ अनु ठाकुर ने पहाड़ी गीत, एमबीए की छात्रा मुस्कान ने गीत की प्रस्तुति दी और एमटीएस पूनम ने अपने विचार रखे।

वहीं इस कार्यक्रम का आयोजन डॉ मनप्रीत अरोड़ा, डॉ रीता देवी और डॉ अदिति शर्मा ने अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय के कुशल मार्गदर्शन में सस्टेनेबिलिटी क्लब, क्युरियोसिटी क्लब, कल्चरल क्लब और स्पर्श एपेक्स कमेटी के सहयोग से किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता वाणिज्य एवं प्रबंधन अध्ययन स्कूल प्रो. संजीव गुप्ता और विभागाध्यक्ष प्रो. दीपांकर शर्मा ने सभी महिला कमर्चारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि एक दिन ही नहीं बल्कि हर दिन महिलाओं का सम्मान होना चाहिए। हर व्यक्ति के जीवन में महिला चाहे वे किसी भी रूप में हो, मां, पत्नी या बेटी, का खास योगदान रहता है। इस कार्यक्रम में सभी महिलाओं को पौधे देकर सम्मानित किया गया। इसमें विद्यार्थियों की भी काफी सहभागिता रही।

आत्मनिर्भरता और स्वास्थ्य जागरूकता का दिया संदेश

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्पर्श एपेक्स समिति, महिला अध्ययन एवं विकास केंद्र (CWSD) और सुनील उपाध्याय एजुकेशनल ट्रस्ट के सहयोग से महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन धौलाधार परिसर एक में किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने किया। संगोष्ठी का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देना था। प्रो. प्रदीप कुमार, डीन अकादमिक ने संरक्षक की भूमिका निभाई, जबकि प्रो. सूर्या रश्मि रावत, अध्यक्ष, स्पर्श एपेक्स समिति एवं CWSD, संगोष्ठी की संयोजक रहीं।

इस संगोष्ठी में एसएसपी कांगड़ा, सुश्री शालिनी अग्निहोत्री मुख्य अतिथि रहीं, जबकि सुश्री तेंजिन पेमा (एमएमए फाइटर और ट्रेनर), ज्योति शर्मा (क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट, जोनल अस्पताल, धर्मशाला) और डॉ. नेहा राणा (स्त्री रोग विशेषज्ञ, जोनल अस्पताल, धर्मशाला) अतिथि वक्ता रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, स्वागत समारोह और स्वयं सहायता समूह (SHG) और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की 70 महिलाओं के सम्मान के साथ हुआ। SHG सदस्यों ने अपने हस्तनिर्मित उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई।

अपने संबोधन में कुलपति प्रो. बंसल ने हिमाचल प्रदेश पुलिस के सहयोग से सभी परिसरों में एक आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विश्वविद्यालय ने पिछली बार यह निर्णय भी लिया था कि हम सेल्फ हेल्प ग्रुप की सहायता करेंगे और हमने केंद्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को एक प्रोजेक्ट के रूप में सेल्फ हेल्प ग्रुप महिलाएं जो हैं, उनके प्रोडक्ट्स को मार्केट तक पहुंचाने के लिए न केवल राज्य में बल्कि राज्य के बाहर हमारे विद्यार्थी उनकी सहायता करेंगे। यह एक अच्छी पहल है । केंद्रीय विश्वविद्यालय और कम्युनिटी के लिए जो सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर इस तरह से वुमन एंपावरमेंट के लिए बहुत अच्छा काम आगे आने वाले समय में होगा । एक और इनिशिएटिव जो हम आज लेने जा रहे है, वह है महिलाओं के लिए सेल्फ डिफेंस । उसके तहत हम 15 दिन का ट्रेनिंग प्रोग्राम हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और हिमाचल प्रदेश पुलिस के साथ मिल कर करवाएंगे। वहीं एसएसपी शालिनी अग्निहोत्री ने SHG और आंगनवाड़ी सदस्यों के साथ बातचीत कर उनके प्रयासों की सराहना की। उन्होंने घर से ही नारी को सशक्त बनाने की पैरवी की। उन्होंने कहा कि जब हम परिवार में बेटा-बेटी को समान समझेंगे तभी इस यह शक्तिकरण सार्थक हो पाएगा। अतिथि वक्ताओं ने मानसिक स्वास्थ्य, महिलाओं के कल्याण और आत्मनिर्भरता पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए। कार्यक्रम का समापन डॉ. अर्चना कटोच द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

इस संगोष्ठी के सफल आयोजन में आयोजन समिति की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रो. निरुपमा सिंह, डॉ. शशि पूनम, डॉ. अर्चना कटोच, डॉ. प्रीति सिंह और डॉ. रुचि शर्मा ने संगोष्ठी के आयोजन में सक्रिय योगदान दिया। आयोजन समिति के सदस्यों में डॉ. मनप्रीत अरोड़ा, डॉ. अदिति शर्मा और डॉ. भावना भारद्वाज शामिल थीं। कार्यालय सहयोग में अनुपम ठाकुर, दीपिका पगड़ोत्रा, अशिमा रानी और स्मृति चौधरी ने योगदान दिया।

आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ

महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, केंद्रीय विश्वविद्यालय ने हिमाचल प्रदेश पुलिस ("निर्भय निष्पक्ष सत्यनिष्ठ") के साथ मिलकर एक स्थायी आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। पुलिस विभाग ने विश्वविद्यालय के तीनों परिसरों में सभी महिला छात्राओं को 20 घंटे का वार्षिक आत्मरक्षा प्रशिक्षण प्रदान करने पर सहमति व्यक्त की है। यह पहल हिमाचल विधानसभा के बजट सत्र के बाद शुरू होगी।

एक सप्ताह तक मिलेगा आत्मरक्षा का प्रशिक्षण

इसके अतिरिक्त, आत्मरक्षा कौशल के महत्व को पहचानते हुए, विश्वविद्यालय ने धर्मशाला परिसर में एक सप्ताह के गहन आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा की है। इस विशेष प्रशिक्षण का नेतृत्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसित प्रो-फाइटर और सेल्फ-डिफेंस ट्रेनर सुश्री पेमा डोलमा द्वारा किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्देश्य महिला छात्राओं को उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए आवश्यक आत्मरक्षा तकनीकों से लैस करना है।

परिवारों में बुजुर्गों की अहमियत को समझें युवा

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के पंजाबी एवं डोगरी विभाग की ओर से 'संभाल लो मापे, रब मिल जाएगा आपे' विषय पर कार्यक्रम का आयोजन धौलाधार परिसर-एक में किया गया। इसमें बतौर मुख्य वक्ता प्रसिद्ध लेखक अविनाश राय खन्ना ने शिरकत की। वहीं विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे। वहीं विशिष्ट अतिथियों में कुलसचिव प्रो. सुमन शर्मा और अधिष्ठाता अकादमिक प्रो. प्रदीप कुमार रहे। इस कार्यक्रम का संचालन पंजाबी और डोगरी विभाग के अध्यक्ष डा. नरेश कुमार ने किया। इस कार्यक्रम का आरम्भ सरस्वती वंदना से हुआ। इसके बाद डा. नरेश कुमार ने सभी गणमान्यों का परिचय करवाते हुए उनका स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल ने कहा कि भारत अपनी संस्कृति के कारण देश-विदेश में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है। संयुक्त परिवारों की परम्परा का जिस तरह से भारत में प्रचलन है, उसके विदेशों में उदाहरण दिए जाते हैं। यह दुर्भाग्य है कि यह प्रचलन अब पश्चिमी सभ्यता की देखादेखी में कम होता जा रहा है। यह ठीक नहीं है। हमारी पहचान "मैं" से नहीं "हम" से होती है। उन्होंने हमारे जीवन में संयुक्त परिवार प्रणाली की अहमियत के बारे प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने माता पिता और बुजुर्गों के साथ समय व्यतीत करने और उनकी सेवा करने का आग्रह किया। उन्होंने भारत और विदेशी संस्कृति की तुलना करते हुए भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों की अहमियत बताई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अभिनाश राय खन्ना (प्रसिद्ध लेखक) ने इस विशेष व्याख्यान में आज के युवाओं को माता पिता की सेवा करने, उनके साथ समय व्यतीत करने, और उनके बुढ़ापे का सहारा बनने का आह्वान करते हुये अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने बजुर्गों की देखभाल करने, उनकी परिवार में अहमियत और उनके जीवनदर्शन के विशेष पहलुओं को पेश करने के लिए उनके द्वारा संचालित किए जा रहे विशेष कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इस कार्यक्रम में उन्होंने कुलपति से अनुरोध किया कि वह अपने विश्वविद्यालय में भी ऐसा कोई कार्यक्रम का आयोजन करें जिससे बच्चों को अपने जीवन में अपने माता-पिता और बजुर्गों के होने की सार्थकता का ज्ञान हो। अंत में अधिष्ठाता संकाय प्रो. रोशन लाल शर्मा ने मुख्य वक्ता तथा कुलपति का धन्यवाद देते हुए इस विशेष कार्यक्रम को सम्पूर्ण किया। इस कार्यक्रम के सह संयोजक डॉ हरजिंदर सिंह रहे। इस कार्यक्रम में कुलसचिव प्रो सुमन शर्मा, प्रो कुलश्रेष्ठ, प्रो योगिंदर, डॉ ललित मोहन शर्मा, डॉ अमरीक सिंह, प्रो खेमराज शर्मा, डॉ० विवेक शर्मा, डॉ हेमराज बंसल, डॉ ओमप्रकाश प्रजापति, डॉ मलकीत सिंह, डॉ नंडुरी राज गोपाल आदि शामिल हुए।

बिहार दिवस 2025: केंद्रीय हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक विरासत का उत्सव

यथार्थ यश पाठक

धर्मशाला केंद्रीय हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, धर्मशाला का शांत वातावरण 21 मार्च 2025 को बिहार दिवस के अवसर पर रंग-बिरंगी सजावट, संगीत की लयबद्ध धुनों और स्वादिष्ट व्यंजनों की महक से जीवंत हो उठा। बिहार राज्य की स्थापना के उपलक्ष्य पर आयोजित इस कार्यक्रम ने विश्वविद्यालय परिसर को एक सांस्कृतिक उत्सव में बदल दिया, जहाँ बिहारी परम्पराएँ हिमालय की पृष्ठभूमि में सजीव हो उठीं। बिहार के विद्यार्थियों ने अपने विभिन्न राज्यों के मित्रों के साथ मिलकर एक शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का आयोजन किया, जिसने पूरे परिसर को मंत्रमुग्ध कर दिया।

उत्सव की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन समारोह से हुई, जिसके बाद ऐसी प्रस्तुतियाँ हुईं जो दर्शकों को सीधे बिहार की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर से जोड़ने लगीं। विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सत प्रकाश बंसल भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए और उन्होंने छात्रों के प्रयासों की सराहना की। अपने संबोधन में उन्होंने राष्ट्रीय एकता के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान के महत्व पर जोर दिया : "मैं चाहता था कि इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों और यह सराहनीय है कि छात्रों ने इसे आयोजित किया, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम यहाँ क्षेत्रीय या प्रांतीय पहचान (जैसे यूपी या बिहार) के आधार पर बंटे हुए नहीं हैं, बल्कि एक राष्ट्र के रूप में एकजुट हैं। इस प्रकार के कार्यक्रम विभिन्न संस्कृतियों को करीब लाने का कार्य करते हैं और हमारी राष्ट्रीय एकता को मजबूत करते हैं।"

कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण में बिहारी लोक नृत्य शामिल थे। झिझिया नृत्य, जिसमें कलाकार अपने सिर पर मिट्टी के दीये संतुलित करते हुए नृत्य करते हैं, भक्ति और शक्ति का प्रतीक था और इसे

दर्शकों से जोरदार सराहना मिली। एक अन्य विशेष प्रस्तुति सामा चकेवा नृत्य की थी, जो भाई-बहन के अटूट रिश्ते का उत्सव मनाता है। नर्तक-नर्तकियों ने पक्षियों की तरह हाव-भाव प्रस्तुत करते हुए बिहार की प्रकृति और पारिवारिक जुड़ाव को दर्शाया।

इतिहास में एमए द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा विष्णुप्रिया ने मैथिली शास्त्रीय गीत "जय जय भैरवी" की भावपूर्ण प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनकी मधुर स्वर ने पूरे वातावरण को मिथिला क्षेत्र की समृद्ध संगीत परंपरा से जोड़ दिया। इसके अलावा, रामायण से "सीता स्वयंवर" का नाट्य मंचन भी विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। भावनात्मक नृत्य-नाट्य शैली और सशक्त अभिनय ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। इस प्रस्तुति ने बिहार की महाकाव्य परम्पराओं से गहरे संबंध को प्रदर्शित किया और छात्र-कलाकारों की अद्भुत प्रतिभा को उजागर किया।

मुख्य-संरक्षक
प्रो.सत प्रकाश बंसल,
माननीय कुलपति
संरक्षक
प्रो. प्रदीप कुमार,
डीन-अकादमिक
सह-संरक्षक
प्रो. सुमन शर्मा
कुलसचिव

मुख्य सम्पादक
प्रो. आदित्य कांत
सम्पादक
डॉ. राम प्रवेश राय
उप-सम्पादक
श्री दीपक वैष्णव
सम्पादकीय टीम
प्रो. चंद्रकांत सिंह
डॉ.विवेक शर्मा
डॉ. हेमराज बंसल
डॉ. पूजा अवस्थी
कृष्णा खरवार
शिवम
अजय कुमार